विहास मंगला

वर्ष 2019-20 के मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी भाषा पठ्य क्रम के तृतीय

सेमिस्टर पर आधारित अध्ययन सामग्री

COMPULSORY FOUNDATION LANGUAGE (CBCS)

HINDI : Group-III – III Semster-B.Sc.,

संपादक

डॉ. एस.ए.मंजुनाथ

हिन्दी विभागाध्यक्ष

पोंपै कॉलेज, ऐकला, मंगलूरु

अध्यक्ष

मंगलूरू विश्वविद्यालय हिन्दी अध्यापक संघ (विहास) मंगलूरू

विहास मंगला

संपादक मंडल

उपाध्यक्ष

प्रो.नागभूषण एच.बी.
हिन्दी विभागाध्यक्ष
श्री भुवनेंद्र कॉलेज, कार्कल.

सचिव

डॉ. शालिनी एम.
एस.डी.एम व्यवहार अध्ययन
महाविद्यालय, मंगलूरु.

कोशाध्यक्ष

डॉ. परशुराम जी. मालगे
हिन्दी विभागाध्यक्ष
बेसेंट महिला कॉलेज, मंगलूरू.

मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी अध्यापक संघ (विहास) मंगलूरु

दो बातें

साथियों मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी अध्यापक संघ (विहास), मंगलूरु विश्वविद्यालय से संबद्ध कॉलेजों के अध्यापक एवं छात्रों को ध्यान में रखते हुए, कुछ वर्षों से निरंतर कई साहित्यिक गतिविधियों का कार्यक्रम आयोजन करता आ रहा है। इनमें हमारे हिन्दी भाषा के छात्र और अध्यापकों के मार्गदर्शन के लिए हिन्दी पाठ्य विषय से संबंधित अध्ययन सामग्री तैयार करना भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है।

प्रस्तुत पुस्तक में वर्ष 2019-20 के मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी भाषा पाठ्यक्रम पर आधारित विशेष अध्ययन सामग्री का संकलन किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित द्वितीय सेमिस्टर (III Semister) के बी.ए.,बी.काम बी.एस-सी.,बी.बी.ए.तथा बी.सी.ए.,के पाठ्यक्रम के अनुसार मध्यकालीन और आधुनिक कविता, लंबी कविता, उपन्यास, नाटक, एकांकी एवं निबंधों का सार इस संकलन में प्रस्तुत है। हिन्दी भाषा के छात्र अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए सरल, प्रवाहमय एवं शुद्ध हिन्दी का उपयोग करें, इस दिशा में उनका मार्गदर्शन हेतु विषय-विशेषज्ञों द्वारा अध्ययन सामग्री तैयार हुई है। अलग-अलग कक्षाओं के प्रत्येक प्रश्न-पत्र के अनुरूप अध्ययन सामग्री यहाँ उपलब्द है। इस संकलन के लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार हैं, इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है ।

मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी अध्यापक संघ **(विहास)** की तरफ से इस प्रकार का मेरे संपादन में चतुर्थ प्रयास है। इस कार्य में साथी अध्यापक मित्रों का भरपूर योगदान है, अतः मैं उनके प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। आशा है कि आप इसको सहर्ष स्वीकार करेंगे। इस संकलन में भूल-चूक होगी अतः आपसे निवेदन है कि कृपया इनका संशोधन करके अपने विद्यार्थियों को मार्गदर्शन करने का कष्ठ करें।

डॉ.एस.ए.मंजुनाथ

संपादक

द्वितीय अध्याय : विज्ञान मंगला (बी.एस-सी.)

1. सरोज स्मृति – निराला- डॉ. नागरत्ना राव
2. खिलौना – राजेश जोशी - डॉ.बी.एच.तलवार
3. दूध का दाम –प्रेमचंद – प्रो. सोफिया डायस
4. मेहमान – राजेंद्र यादव- डॉ.मंजुनाथ उडुपा
5. हीली बोन की बतखें – अज्ञेय – प्रो.नागभूषण एच.बी.
6. हत्यारे – अमरकांत- प्रो.नागभूषण एच.बी.
7. बादलों के घेरे में –कृष्णा सोबती- रामकृष्ण
8. नेलकटर – उदयप्रकाश- मार्सेल लूविस मस्करेनस
9. हरी बिंदी – मृदुला गर्ग- मार्सेल लूविस मस्करेनस
10. नो बार – जयप्रकाश कर्दम- प्रफुल्ला बी.

1. सरोज स्मृति

-श्री सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

छायावादी काव्य के पुरोधा कवि निरालाजी ने अपनी लेखनी के माध्यम से अनेक विधाओं को समृद्ध किया है। कहानी , उपन्यास , निबंध ,रेखाचित्र के साथ - साथ इन्होने लम्बी कविता जैसी नवीन विधा को भी विकसित किया है। निरालाजी की कविताओं में लाक्षणिकता ,कल्पनाशीलता ,प्रकृति सौंदर्य आदि तत्वों ने उन्हें महाकवि के समतुल्य बना दिया है। उनकी कविताओं में प्रकृति की विराटता , कोमलता और कठोरता है। छायावादी प्रवृत्ति से फिर निरालाजी प्रगतिवादी स्वर के साथ युगीन यथार्थ का चित्रण करने लगे। उनके स्वभाव में फक्कड़पन और विचारों में विद्रोही स्वर के कारण उनकी रचनाएं बहुआयामी हैं। इस प्रकार अपने व्यक्तित्व और वैयक्तिक साधना के बल पर उनके काव्य में जो सामंजस्य दिखाई देता है ,उसका श्रेष्ठ उदाहरण है -उनका शोक गीत - सरोज – स्मृति। हिंदी में यह कविता अपने ढंग का एकमात्र शोक - काव्य है। यह कविता एक दुखी एवं बेबस पिता द्वारा अपनी पुत्री की मृत्यु पर लिखा गया करुण भाव प्रधान रचना है। यह अपने ढंग की अकेली कविता जिसमें नीति , श्रृंगार ,व्यंग्य ,हास्य - प्रसंग और स्वयं निरालाजी के अपने जीवन की वैयक्तिक कहानी भी आ गयी है।इस कविता की वस्तु इसीलिए विशिष्ट बन पड़ी है जिसके भिन्न पहलू इस प्रकार है। निरालाजी ने इस कविता में अपनी बेटी सरोज के बाल्य - काल से लेकर उसकी मृत्यु तक की घटनाओं को बड़े हीप्रभावशाली ढंग से वर्णित किया।कवि निरालाजी की पुत्री का नाम सरोज है। वे अपनी इकलौती और लाडली बेटी से बेहद प्यार करते थे। उनके जीवन का सबसे बड़ा दुःख यह है कि न वे उसके बचपन का आनंद उठा सके और न ही समय पर उसका इलाज करवा सके। वे अपनी आर्थिक दुर्दशा के कारण उसके प्राण नहीं बचा सके। सरोज ने अपने जीवन के प्रथम चरण में

कदम रखा ही था कि अपनी माँ को खो दिया। फिर विवाह के बाद अपने दाम्पत्य जीवन में प्रवेश ही किया था कि स्वास्थ्य बिगड़ने के कारण अपनी जान गँवा दी। कवी अपनी पुत्री को इस कवितामें कई नामों से सम्बोधित करते हैं जिससे उनका वात्सल्य अभिव्यक्त होता है जैसे - तनया ,गीत ,धन्ये आदि। वे इन नामों से उसे पुकारते हुए उससे शिकायत करते हैं कि तुम भी अपनी माँ के जैसे मुझे इस धरती पर अकेला छोड़ स्वयं स्वर्ग चली गयी। जब तुम मुझे छोड़कर जा रही थी तब ऐसा लग रहा था कि मानो तुम मुझे धीरे से कह रही हो पिताजी ! मैं पहले जाकर आपके आने का इंतज़ार करुँगी।;इसलिए कवि कहते हैं - तुम धन्य हो पुत्री जो तुम मरकर भी मेरे बारे में सोचती हो ,पर मैं तुम्हारा पिता ही निरर्थक था जिसने अपना कोई भी कर्तव्य पूरा नहीं किया। मेरी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा दुःख ही यह है कि मई तुम्हे कोई ख़ुशी नहीं दे सका।;तुम्हारे जीतेजी मैं कुछ न कर सका तो अब तुम्हारे लिए एक शोक गीत लिख रहा हूँ जिसमे मेरे मन की सभी भावनाओं को उंडेल रहा हूँ। मेरे मन में तुम्हारे लिए जो भी भाव है उन सब को समेट कर लिख रहा हूँ। मुझे इस बात का बेहद दुःख है कि तुम्हे न माँ के आँचल का साया मिला और न पिता का प्यार। कवि अपनी स्वर्गीय पुत्री सरोज के लिए अफ़सोस जताते हुए उसे सम्बोधित कर कहते हैं कि तेरी माता के अभाव में उसके द्वारा दी जाने वाली शिक्षा भी मैंने ही तुझे दी। कवि के मन में ख्याल आया कि जिस प्रकार कण्व ऋषि की पुत्री शकुंतला माँ - विहीन थी उसी प्रकार मेरी पुत्री सरोज भी। लेकिन इन दोनों में एक अंतर यह है कि शकुंतला की माँ उसे स्वयं छोड़कर चली गयी थी किन्तु सरोज की माँ को असमय ही मौत ने अपने पास बुला लिया था। इस कविता की वस्तु को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है-१)सरोज का बचपन २)सरोज का विवाह सरोज का बचपन -सरोज की माँ के गुज़र जाने के बाद उसका बचपन अपनी नानी की प्रेममयी गोद में अपने ननिहाल में बिताया। सवा साल की उम्र में ही अपनी माँ को खोने के बाद सरोज नानी के यहाँ पली -बढ़ी। वहां पर उसे नानी के साथ - साथ

मामा - मामी का भी प्यार मिला। कवि कहते हैं कि तू वहीँ पर कली के रूप में खिली , उनके स्नेह में पली ,वहीँ की लता बनीं और अंतिम समय में तुमने अपनी मृत्यु का वरण भी वहीँ पर किया। उन्हें दुःख है कि वे अपनी बेटी के हित कुछ न कर सके। इसलिए उसके अस्तित्व को अमर बनाने के लिए वे अपने स्नेहपूर्ण शब्दों का हार उसे समर्पित करते हैं। वे याद करते हैं कि किस प्रकार उनकी सास ने उनके दूसरे विवाह के लिए कितना यत्न करती हैं?लेकिन कवि नहीं करना चाहते थे इसलिए उन्होंने अपनी छोटी बेटी का हाथों अपनी जनम - कुंडली खेलने के लिए दे दी। इस प्रकार उन्होंने स्वयं प्रयास करके अपने दूसरे विवाह की संभावना को टाल दिया। उनकी सास ने तो उनके लिए एक पढ़ी - लिखी लड़की देख भी ली थी। इस प्रकार कवि निरालाजी अपने सिद्धांतों और तत्वों पर सदा अटल रहे। जीवन में जब उन्हें अपनी पत्नी का साथ चाहिए था तब वो उन्हें छोड़ कर चली गयीं और जब वे अपनी बेटी को विदा कर राहत की सांस ले रहे थे कि तभी उसकी असमय मृत्यु हो गयी। इस प्रकार उन्हें न पत्नी के साथ का आनंद मिला और न वे अपनी बेटी की देखभाल कर सके। अपनी आर्थिक दयनीयता के कारण उन्हें अपनी बेटी को खोना पड़ा। सरोज का विवाह -अब कवि सरोज के बचपन से निकलकर उसकी युवावस्था में प्रवेश करते हैं और वे उसके विवाह के क्षणों का स्मरण करते हैं क्यूंकि उसकी शादी के बाद वह बहुत काम समय जीवित रही। सरोज के विवाह के सन्दर्भ में उसके श्रृंगार को देखकर उन्हें अपनी पत्नी की याद आयी। फिर वे अपनी पत्नी के निराकार श्रृंगार का वर्णन करते है। उसके बाद वे अपनी पत्नी के साथ बिताये पलों का स्मरण करते हैं। दुल्हन के रूप में बेटी को सजा देखकर उन्हें ऐसा लगा मानो स्वर्ग - लोक से उनकी पुत्री पृथ्वी पर उतर आयी हो। उसका विवाह हुआ , एक विशिष्ट तरीके से जिसमें कोई आत्मीय जन नहीं था क्यूंकि निरालाजी स्वयं नहीं चाहते थे कि कोई उनकी बेटी के विवाह में न आये। वे परंपरा के विरुद्ध विवाह - कार्य संपन्न करना चाहते थे जिसमें कोई गीत नहीं ,कोई जगराता नहीं। उन्होंने बड़े ही साधारण

तरीके से सरोज का विवाह किया। इस नव जोड़ी ने नव जीवन में बड़ी उम्मीदों के साथ प्रवेश किया। इस विशिष्ट विवाह के सन्दर्भ में कवि को एक दृश्य अत्यंत स्मरणीय रहा जब सरोज पर कलश का शुभ्र जल छिड़का जा रहा था। तब वह मंद - मंद मुस्करा रही थी। सबसे विषादजनक बात यह है कि कितने अरमानों से उसका विवाह हुआ वो सारे टूट गए।सरोज का बहुत ही कम समय में दाम्पत्य जीवन समाप्त हो गया। यही कवि के जीवनं की सबसे बड़ी विडम्बना है।

इस प्रकार यह कविता एक भाग्यहीन पिता का आत्मसंघर्ष और अपनी पुत्री के लिए कुछ न कर पाने का अकर्मण्यता बोध अभिव्यक्त करता है। कवि ने अपनी बेटी सरोज के जन्म , बाल्यावस्था से लेकर उसकी तरुणाई के विविध प्रसंगों को बड़े ही मार्मिक ढंग से अंकित किया है। यह कविता आदि से लेकर अंत तक दुःख या शोक से सराबोर होने के कारण यह हिंदी का उत्कृष्ट शोक - काव्य बन पड़ा है।

सप्रसंग व्याख्या के प्रश्न :

१) तू गयी स्वर्ग ,क्या यह विचार -

जब पिता करेंगे मार्ग पार

यह , अक्षम अति ,तब मैं सक्षम ,

तारूँगी कर गह दुस्तर तम ?

२) धन्ये ,मै पिता निरर्थक था ,

कुछ भी तेरे हित न कर सका !

जाना तो अर्थगमोपाय

पर रहा संकुचित काय।

३) सोचा है नत हो बार - बार

यह हिंदी का स्नेहपार ,

यह नहीं हार मेरी , भास्वर

वह रत्नहार -लोकोत्तर वर।

४) सब किये वही कौतुक विनोद

उस घर निशि - वासर भरे मोद

खाई भाई की मार , विकल

रोइ ,उत्पल - दल -दृग -छलछल।

५) कुंडली दिखा बोली -;ए -लो

आई तू ,दिया ,कहा खेलो

कर स्नान शेष , उन्मुक्त -केश

सासुजी रहस्य - स्मित सुवेश।

६) हो गया ब्याह , आत्मीय - स्वजन

कोई थे नहीं , न आमंत्रण

था भेजा गया ,विवाह - राग

भर रहा न घर निशि - दिवस जाग।

७) इस पथ पर , मेरे कार्य सकल

हों भ्रष्ट शीत के - से शतदला

कन्ये , गत कर्मों का अर्पण

कर , करता मैं तेरा तर्पण।

निबंधात्मक प्रश्न -

1. सरोज - स्मृति एक शोक गीत है। पठित कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिये।
2. निरालाजी अपनी कविता में सरोज की किन विशेषताओं का वर्णन करते हैं ? समझाइये।
3. सरोज के लघु जीवनावधि की विभिन्न घटनाओं का चित्रण कीजिये।
4. निरालाजी अपने किस दु:ख की अभिव्यक्ति कविता के माध्यम से कैसे करते हैं ? वर्णन कीजिये।

-प्रस्तुति

डॉ.नागरत्ना एन. राव,

सह आचार्य, विश्वविद्यालय कॉलेज, मंगलूरु

****

2. खिलौना

-राजेश जोशी

कवि परिचय :

वर्तमान कविता के प्रमुख हस्ताक्षर राजेश जोशी (18 जुलाई 1946) अपनी सशक्त एवं समर्थ काव्या अभिव्यक्ति से आठवें दशक की हिन्दी कविता में एक विशेष पहचान लेकर उपस्थित होनेवाले बहु चर्चित कवि हैं । राजेश की कविता का प्रमुख स्वर जनवादी चेतना है । आम जनता से जुड़ी समस्याओं को अपने काव्य का विषय बनाना राजेश के स्रजन क्षेत्र का अनिवार्य पहलू है। जिसके कारण राजेश की कविता वर्तमान (सन 1980 से अब तक) के काव्य मे विशिष्ट प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ सिद्ध हुई है । राजेश जोशी ने समकालीन परिवेश के संबन्धी हमारी मृतआत्मा को जीवित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है । कविता, कहानी, नाटक, संपादन , अनुवाद, फिल्म पटकथाकार तथा अभिनेता आदि उनके व्यापक जीवन के अंग हैं। राजेश जोशी का जन्म 18 जुलाई 1946 में नरसिंहगढ़ , मध्यप्रदेश में हुआ । इनका जन्म एस परिवार में हुआ जो पहले से ही संस्कार संपन्न था । धर्म से वे हिंदू और जात सेब्राह्मण है । राजेश जोशी का घर में स्थान सबसे बड़ाभी नहीं और सब से छोटा भी नहीं था । बल्कि सबसे छोटे से बड़ेके रूप में था। जोशी की माता का नाम 'कमलाजोशी था।

इन मे ममत्व की अपार गरिमा थी । राजेश जोशी माता का विशेष लाडला बेटा था । इन के पिता का नाम 'ईश नारायण जोशी' था। वे संस्कृत के प्रकांड पंडित थे । साथ वे गुजराती , जापानी एवं अंग्रेजी भाषा के भी विद्वान थे । जोशी के परिवार में सब मिलाकर पांच भाई और

एक बहन परिवार का सदस्या थी। बड़े भाई उमेश जोशी इंडोर में डिस्ट्रिक्ट जज थे। राजेश की बहन का नाम 'कविता शास्त्री है , यह पांच भाइयों में इक लौती बहन थी । प्राथमिक शिक्षा भोपाल में ही हुई थी । प्राथमिक शिक्षा के बाद और कालेज की पढ़ाई के बाद उन्होंने 'प्राणिशास्त्र' विषय में एम एस सी किया तथा समाज शास्त्र में एम ए किया है । शिक्षा के बावजूद उन्होंने जेजेआर्ट सर्टिफिकेट कोर्स तथा पेंटिंग का भी कोर्स किया है। राजेश जोशी का परिवार बहुत छोटा परिवार है। इनका विवाह 1980 में बंगाली लड़की , निरुपा के साथ हुआ। वह पाढ़ी– लिखी एवं संस्कार संपन्न घर की लड़की थी । वह आज भी स्टेट बैंक ऑफ इंडिया शाखा में कार्यरत हैं । बेटी 'पुरुप का जन्म हुआ । आज वह आय. आय.टी संस्था से पीजी कर चुकी है । इन का सुसंस्कृत परिवार इन के जीवन की महानतम उपलब्धि है । संस्कार संपन्न राजेश जोशी ने शिक्षा के ख़त्म होते ही सब से आरम्भ में स्कूल मास्टर की नौकरी स्वीकार की थी । वे आरंभ में रामपुर , गौतमपुर , इंदौर में नौकरी करते रहे और फिर कुछ दिनों बाद स्कूलमास्टरी से तंग आकर 'इस्लामिया करिए कालेज , इंदौर मे कुछ दिनों तक अध्यापक की नौकरी की, परंतु मन की व्यवस्था के सन्दर्भ में बेचैनी अभी भी खत्म नही हुई थी, इसी कारण राजेश ने इस नौकरी को भी त्याग दिया था । परंतु एक सम्वेदन शील मन की बेचैनी का अंत नहीं हुआ यही कारण है, कि उन्होंने बाद में बैंक में नोकरी को स्वीकार किया। वे स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, शाखा इंदौर व भोपाल से अंत तक जुडे रहे । लंबी सेवा के बाद रिटायर होगए हैं। समकालीन व्यवस्था के संबंधी आक्रोश को प्रथम उन्होंने अखबार में लिखा ना शुरु

किया था । इस के बाद लोकल अखबार में पहली कहानी छपी । बाद में 1973 में 'वातायन' पत्रिका में कविता प्रकाशित हुई थी । साथ में राजस्थान की 'लहर' पत्रिका में कविता प्रकाशित हुई थी । सन 1980 में प्रसिद्ध त्रिलोचन शास्त्री के काव्य का संकलन किया । इस तरह से यह राजेश जोशी के साहित्यिक लेखन का आरंभिक दौर था । बाद में 1973 के 'प्रगतिशील लेखक संघ के आंदोलन ने राजेश को खूब प्रभावित किया है । इस की कई पत्र पत्रिकाओं ने राजेश के सम्वेदन शील मन को उद्वेलित करने का कार्य किया है। राजेश की साहित्यिक चेतना को अधिक प्रभावित करने वाले हैदराबाद के प्रगतिशील कवि

वेणुगोपाल का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । राजेश जोशी को निम्न लिखित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है । मुक्तिबोध पुरस्कार 1978, माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार 1985, श्रीकांत वर्मा सम्मान 1986, शमशेर सम्मान 1996, पहल सम्मान 1998, साहित्य अकादमी पुरस्कार 2002, कृतियां- कविता संग्रह , एक दिन बोलेंगे पेड़ 1980, मिट्टी का चेहरा 1984,नेपथ्य में हंसी 1994,दो पंक्तियों के बीच 2000, चांद की वर्तनी 2006, गेंद निराली मित्तू की 2010, कहानी संग्रह : सोमवार और कहानियां, कपिल का पेड़ 2001, नाटक: जादू जंगल. 1982, हमे जवाब चाहिए 1984, टंकार का गाना 1989, अच्छे आदमी 1996, सपना मेरा यही सखी (एक पत्रिका में प्रकाशित पूर्ण नाटक), नाट्य रूपांतर: पासे, तुक ए पर तुक का, तुम सादत हासन मंटू हो , संपादन: इसी लिए पत्रिका 1977 से 1984 तक, वर्तमान साहित्य पत्रिका 1992, नया पथ पत्रिका 1995, नया पथ पत्रिका 1996. नया पथ पत्रिका 1997. इन्होंने विभा मिश्रा की फिल्म 'घर' की पटकथा लिखी है। यह फिल्म श्री कांत वर्मा की कहानी

पर आधारित थी । दूसरी फिल्म 'डेनिडा कंपनी द्वारा निर्मित फिल्म 'एक अनार सो बीमार 'का लेखन किया है । विभा मिश्रा की ही फिल्म जो निराला के जीवन पर आधारित थी , उस में राजेश जोशी ने अभिनय किया है । चांद की वर्तनी कविता संग्रह (2006) यह राजेश जी का पांचवा नवीन तम काव्य संग्रह माना जाता है। जोसन 2006 में प्रकाशित हुआ है। जनवादी का कवि अरुण कमल ने इस संग्रह को हिन्दी कविता का एक नया शिखर कहा है । इस में कुल 49 कविताएं संकलित हैं । इन में इक्कीसवीं सदी के परिवर्तित परिदृश्य की यथाशक्तिका आकलन बड़ी निष्ठा से एवं नवीन बोध के साथ प्रस्तुत हुआ है।

कविता परिचय :

प्रस्तुत श्रीराजेश जोशीकी लंबी कविता खिलौना उनके पांचवाकाव्य संग्रह चाँदनी की वर्तनी के 49 कविताओं में एक है। जो 2006 में प्रकाशित हुआ था । इस कविता की रचना के पीछे एक भूमिका है। एक साक्षात्कार में खुद राजेश जोशी ने पूछेगए सवाल का जवाब देते हुए दो महत्तवपूर्ण बातोंका खुलासा करते हैं। एक तो रचाने में उनकी सबसे कठिन कविता खिलौना थी। दूसरी यह थी कि उनके मित्र विजयकुमार एक दिन बातों में बताते हैं कि उनके एक मित्र खिलौने की दुकान रखकर खूब पैसे कमाचुके हैं । तब सोच में डूबेहुए राजेश जी उत्तर के रूप में अपने मित्र विजयकुमार जी को संबोधन करते हुए 2004 में इस लंबीकविता की रचना करते हैं । इस में कवि राजेश जी खिलौने के माध्यम से आधुनिक जीवन के विविध आयामों का अनावरण किया है।

सारांश:

कवि पहली ही पंक्ति में अपने आपको खिलौना मानते हैं । जो आधुनिक जगत जिस प्रकार के खिलौने होते हैं। और वे किस प्रकार रिमोट से चलाये जाते हैं। मनोरंजन के साथ-साथ उनमे क्रूरता और बदसूरती भी दिखाई देती है । उसी तरह मैं एक बदसूरत खिलौनाहूं. कवि कामानना है। किखिलौ ने की दुनिया आसान नहीं है। वे बच्चो को हिदायत देते हैं कि खिलौने के साथ समझदारी की दूरी बनाए रखे क्यों कि अक्सर हैं । खिलौने दो तरह के होते कुछ खिलौने जीवन को अच्छे संस्कार के साथ रुपायित करने वाले आकार के होते हैं । तो कुछ जीवन को बिगाड़ ने वाले आकार के है। कहने का मतलब है कि दुनिया में मनुष्य को अच्छे और बुरे दोनों तरह के संस्कार प्राप्त होते हैं। जैसे खिलौने को तैयार होते देखते हैं यानी बचपन में बच्चे खिलौने के साथ खेलते हुए उनसे प्रभाव हासिल करते संस्कारित होते हैं । और जीवन भार वे ही प्रतिफलित होते रहते हैं । आगे कवि कहता है कि जीवन रूपी कारीगर में कोई अच्छे तालीम पाएहुए इंजीनियर ने उसे बनाया है । जो इस कवि रूपी खिलौना बनाना चाहता था और कई दिनों से उसकी खोपड़ी में यह खिलौना रूपी डिजाइन कब्जा करके बैठा था। बड़ी मशक्कत और कोशिश के साथ बनाया है। कवि का कहना है कि उसे एक आकार में लानेके लिए कईबार उसे बदलदिया गया है । फिल्म के जोकर से अलग आकार देनेकी कोशिश नाकाम हुई। क्यूंकि जो करकहीं भी हो अपने आकार और पोशाक से, कर तब से पहचान लिये जाते हैं। विशेष कर बच्चे जो कर को देखकर आकर्षित होते हैं । चाहेउन्हें पहले कभी न देखा हो और उन खिलौना से

दोस्ती करने में नहीं हिचकिचाते है । आगे कवि एक उदाहरण पेश करते हुए कहते हैं कि एक प्रतिभाशाली लड़काथा जो अपने अंदाज से आज के समाज में अकेले होते जाते बच्चों के लिए खिलौना बनाना चाहता था । फिल्मी चरित्रों को एनिमेशन द्वारा बनाने का शौक रखा था । मगर वह मज़बूर होकर खिलौना बनाने की कंपनी में काम करने लगा । नापसंद काम की वज़ह से खीज कर रास्ता बदलने का निश्चय करने पर भी अपने गुस्सापी कर भटक कर वापस उसी खिलौने की दुनिया में लौट आता है। अगले भाग में कवि अपने बातों का समर्थन करते हुए बच्चों से संबोधन करके कहते हैं , जो साठ के दौर के बाद कैसे समाज में परिवर्तन आया , व्यवस्था बदली जिससे संयुक्त परिवार के विघटन होकर परिवार की संरचना बदल कर छोटे-छोटे परिवार बनते गये परिणाम स्वरूप बच्चे अकेले पड़ते गये और संबंध , भावना तथा संवेदनशीलता से परे होते गये। बच्चों के मन पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा । अतः आज के बच्चों में नैतिकता की कमी और हिंसा की तीव्रता अधिक दिखाई देती है। लेकिन नया परिवर्तन खूबी के साथ-साथ समस्याओं का सामनाभी करना पड़ता है । खिलौना बनाने वाले डिजाइनर कई कहानियां सुना औऱ बहसें की तब उसे यह परिवर्तन अच्छा लगा कि पूरी उम्र दमघुटनेवाले घर में रहें मौसी और बहने बाहर जाने लगी है । फिर भी वह अपनी विचारधारा पर अडिग रहा । हमेशा सोच मे था कि बच्चे अकेले होते जा रहे हैं। अर्थात् यहां कवि उस डिजाइनर की बात कर रहे हैं जो शायद भगवान होसकता है या खुद कवि भी हो सकता है। कवि अपने आपको अकेले होने वाले बच्चे का पात्र मान रहे हैं । कवि आगे बढ़ते हुए कहते हैं कि सिर्फ बच्चों के बारे में सोचने से विकसित होते गरीब समाज की परेशानियां कम नहीं होतीं। क्यूंकि बदलते वक्त के

साथखिलौने के बाजार भी बदलगया । खिलौने के आकार और रूप भी बदल गये । खिलौने की दुकाने प्लास्टिक की नकली बंदूकें , मशीनगणों से, पिस्तौल जैसे खिलोनों से भरगए । अन्याय और हिंसा की दुत्कार हमेशा गरीब बाल मजदूरों पर प्रकट की जाती है अब वह भाव उनके हाथों में थामे खिलौने मे प्रकट हो रहा है । यही बात कवि को बच्चों के बारे में सोच ने के लिए मजबूर किया । कवि का कहना है कि उन्ही दिन वह अपने दिमाग में चक्कर लगाने वाले काग़ज़ और ड्राइंग कॉपियों में दबे खिलौने का बच्चों के लिए एक नया संसार खड़ा कर देगा । लेकिन सांड की तरह बाजार उस के सपनों को कुचलने के लिए तैयार था । कवि मानते हैं कि बच्चों की जरूरत समझने से ज्यादा खिलौने की दुनिया कोही बदलने की जरूरत है । आगे कहते हुए कवि यह स्पष्ट करते हैं कि मैं एक खिलौना हूं बदलते हुए वक़्त और दुनिया के साथ इस दौर में खिलौने के प्रति व्यावहार भी बदल गया है आज के बच्चों के पास जो है वह कवि के बचपन की दुनिया में नहीं था । लेकिन पहले जो आसानी से मिलता था एसा अब नहीं मिलाता है । कविता के अंत में अपने आपको कवि होने का संकेत देते हुए कहते हैं कि मैं एक खिलौनाहूं , लेकिन फिर भी मुझमे कुछ विशेषता है । नई दुनिया की मांग पर बनाने के बाव जूद मुझे बनाने वाले कलाकार बाजार की नजर बचा कर खिलौने की इच्छा और स्वप्न को बरकरार रखा है । अर्था तसमाज में कवि बनकर अपनी विचारधारा को सामने रखना चाहते हैं । अंत मे कवि राजेश जी संसार रूपी खिलौने की दुनिया में अपने को मात्र एक जोकर मानते हुए कहते हैं , मैं नये समाज का रिमोट वाला खिलौना हू बटन दबाने के अनुसार करतब दिखाता हूं । लेकिन बच्चों रूपी समाज को हिदायत के साथ हल्की सी चेतावनी भी देते हैं कि मुझे छूकर खेलते समय मुझे बनाने

वाले कलाकार के सपनों को भी छूने की भी कोशिश करना। यानी कवि समाज मे उनकी विचार धारा की कदर करने के लिए निवेदन करते हैं। राजेश जोशी अपनी इस लंबी कविता के माध्यम से अपने आपको खिलौना मानते हुए समाज , जीवन और मनुष्य का बचपन तथा खिलौने के साथ रहे संबंधों का विश्लेषण विस्तार के साथ करते हैं।

सन्दर्भ सहित व्याख्या के प्रश्न :

1. मैं एक खिलौना हूं सर्कस के ..... लात जमा सकता हूं।
2. हो सकता है कभी तुममें से..... सपनों से रचे जाते हैं।
3. मेरी आकृति को गढ़ने के..... अलग होना चाहिए।
4. फ़िल्मों द्वारा बनाई गई.....बाते इतनी यकसा होती है।
5. समाज में दिनों दिन अकेले..... कुछ कर सकता था।
6. लेकिन उसने खिलौने की..... ..... दुनिया में लौट आता।
7. हर नया परिवर्तन नई..... अकेले होते जाएंगे।
8. झूला घरों का चलन..... की जा रही थी।
9. हमारा अन्याय और..... प्रकट हो रही थी।
10. यह खिलौना की इस..... पूरी तरह बदल डालेगा।

निबंधात्मक प्रश्न :

1. 'खिलौना' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'खिलौना' कविता मे कवि का आशय क्या है स्पष्ट की जिए।

3. गरीबी और बाल मजदूरों की समस्या का अनावरण कैसे किया गया है , कविता के माध्यम से समझाइए।

4. जीवन के विविध आयामों का विश्लेषण कैसे किया गया है । खिलौना कविता के आधार पर स्पष्ट की जिए।

5. जीवन और खिलौने का कितना गहरा संबंध है कविता के माध्यम से समझाइए।

-प्रस्तुति

बी.एच.तलवार

सहायक प्राध्यापक, एफ.एम.के.एम.के.कालेज, मडिकेरी

****

3. दूध का दाम

–प्रेमचंद

'दूधकादाम 'प्रेमचंद की प्रतिनिधि कहानी है । इस कहानी में प्रेमचंद ने दलितों के प्रति समाज के दोहरे रवैये को उजागार किया है जिसमें एक दलित को उसकी सेवा का फल तिरस्कार के रूप में मिलता है ।

कहानी में एक दलित परिवार है, उसका मुखिया गूदड है । गूदड की पत्नी भूँगी है । उनका एक बच्चा है, उसका नाम मंगल है । भूँगी दाई का काम करती है । कहानी में महेशनाथ नामक एक बाबू का परिवार भी है । वे गाँव के जमींदार एवं शिक्षित व्यक्ति थे । वे जाति के सवर्ण हैं । तीन पुत्रियों के जन्म के बाद बच्चे के जन्म के समय वे शहर से नर्स लाना चाहते थे । लेकिन उसके लिए बहुत खर्च करना पडता । यह उसके बस में नहीं था । इसलिए प्रसव हेतु गूदड की पत्नी भूँगी को ही बुलाते हैं । महेशनाथ की इच्छा के मुताबिक उनको पुत्र पैदा होता है । पुत्र पैदा होने मे भूँगी दाई का काम बखूबी करती है ।

भूँगी को भी मंगल नामक तीन महीने का पुत्र था । किन्तु वह अपने बेटे को दूध नहीं पिला सकी । उसकी मालकिन को दूध नहीं उतरता था । इसलिए मालकिन के बेटे सुरेश को दूध पिलाने के लिए भूँगी को तरह तरह के लालच दिए जाते हैं । इसलिए भूँगी ने अपने बेटे को छोडकर मालकिन के बेटे को दूध पिलाया । इस कारण से महेशनाथ के परिवार में भूँगी का महत्व बढ जाता है । यह एक वर्ष से ज्यादा नहीं चला । देवताओं ने बालक के भंगिन का दूध पीने पर आपत्ती की । कहानी में एक शास्त्रीजी भी है जो महेशनाथ को धर्म का पाठ पढाते हैं । इस तरह भूँगी द्वारा महेशनाथ के पुत्र को दूध पिलाना बंद करवा दिया जाता है ।

समय बीतता जाता है । प्लेग की बीमारी के कारण गूदड मर जाता है । उसका बेटा मंगल दुर्बल और सदा रोगी रहने वाला, बडा होने लगता है । सुरेश के सामने वह पिद्दी सा लगता है । गूदड के मरने के बाद भूँगी अपने बेटे के साथ अकेली रहने लगी ।

एक दिन भूँगी महेशनाथ के घर का नाला साफ कर रही थी, तब उसे एक विषैले साँप गेहुँ अनने काटा, इससे उस की मौत हो जाती है । मंगल अब अनाथ था और बिलकुल अकेला था । अछूत होने के कारण उसके साथ कोई नहीं खेलता था । ऐसे में उसका साथी एक टॉमी (कुत्ता) बनगया । वह अपने सहवर्गियों के जुल्म से द:खी होकर मंगल की शरण में आ पडा था । मंगल और कुत्ते को पेट भरने के लिए जूठन महेशनाथ के घर से मिलता था । वह कुत्ते के साथ मकान के सामने के नीम के पेड के नीचे डेरे में रहता था । कभी कभी घर आता जाता, जहाँ उसकी पुरानी यादें जुडी हुईं थी ।

एक दिन महेशनाथ का बेटा सुरेश मंगल को खेलने बुलाता है । पहले मंगल मालिक के भय से खेलने से इनकार करता है । लेकिन सुरेश के यह कहने पर कि यहाँ देखने कोई नहीं आएँगे मंगल खेलने के लिए तैयार होता है । महेशनाथ का बेटा उसे खेल खेल में घोडा बनने को कहता है तो मंगल यह कहकर इनकार कर देता है कि "मैं बराबर घोडा ही रहूँगा, कि सवारी भी करूँगा ? यह बता दो ।"

सुरेश उसे जबरन घोडा बनाकर उस पर सवारी करता है । थोडी देर मंगल आगे चलता है, लेकिन सुरेश के बोझ से उसकी कमर टूट जाती थी । उसने पीठ सिकोडी तो सुरेश नीचे गिर जाता है । सुरेश रोता हुआ घर जाता है । इसके बाद मंगल को मालकिन के तीव्र क्रोध का सामना करना पडता है । अत्यंत ग्लानि और पीडा के साथ रोते हुए वह अपने घर जाता है और टॉमी के साथ खूब रोता है ।

धीरे धीरे शाम होती है । मंगल सोचता है कि शायद उसे कोई मालकिन के घर से जूठन के लिए बुलायेगा । अंधेरा होने लगता है और पेट की आग जब बढने लगती है तो वह स्वयं महेशनाथजी के घर आकर अंधेरे में खडे होकर महेशनाथ और सुरेश को भोजन खतम करते हुए देखता है । कहा रमालिक की जूठन पत्तल में डालकर जैसे ही फेंकने आता है, मंगल भूख के मारे थोडा सरक कर आगे आकर हाथ फैला देता है । जूठन हाथ में लेकर मंगल टॉमी को खाना देकर खुद भी खाने लगता है और अपने पेट की आग बुझाने की कोशिश करता है । तब वह खाना खाते हुए सोचता है और कुत्ते से कहता है कि मेरी माँ नेइनके लडके को दूध पिलाया, दुनिया कहती है कि दूध का मोल कोई नहीं चुका सकता और मुझे दूध का दाम यह मिल रहा है ।

विशेषताएँ:

मानव संवेदना से ओतप्रोत कहानी 'दूध का दाम' लग भग सौ साल पूर्व भारत देश में विद्यमान जाति प्रथा, ऊँच–नीच, छुआछूत, गरीबी–अमीरी को रेखांकित करती है । इस कहानी में प्रेमचंद ने समाज के दोहरे रवैये पर व्यंग्य किया है । जहाँ नीची जाति के व्यक्ति से अपना काम निकलवाना होता है, तब छुआछूत दिखाई नहीं देती लेकिन जब उनको अधिकार देने की बात आती है तब छुआछूत नजर आती है । जब भूँगी से अपना काम निकलवाना था, तब महेशनाथ बाबू को उनकी नीची जाति नहीं दिखाई दी । लेकिन जब उनके लडके का ध्यान रखने की बात आई तब वह नीची जाति का दिखाई देने लगा । वे अनाथ बच्चे मंगल को अपमान. प्रताडना, शोषण और अन्याय के अलावा कुछ नहीं देते । यह कहानी सामाजिक रीति रिवाजों पर भीती खा प्रहा रकरती है । कहानी की भाषा सरल और बोधगम्य है । शीर्षक विषय वस्तु के अनुकूल है । पढते वक्त शुरु से अंत तक उत्सुकता बनी रहती है ।

एक शब्द यावाक्य में उत्तर दीजिए ।

1. भूँगी कौन–सा साँप काटने से मर जाती है ? -विषैला साँप गेहुँअन
2. भूँगी के पति का नाम क्याहै ? -गूदड
3. 'दूध का दाम' कहानी के कहानीकार कौन हैं ? -मुंशी प्रेमचंद
4. गूदड किस बीमारी से मर जाता है ? -प्लेग
5. गूदड और भूँगी के बेटे का नाम क्या है? -मंगल

निबंधात्मक प्रश्नः

1. 'दूधकादाम' कहानी का सार लिखकर विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।
2. 'दूधकादाम' कहानी का सार लिखकर उद्देश स्पष्ट कीजिए ।
3. 'दूधकादाम' कहानी में चित्रित शोषण का वर्णन कीजिए ।

टिप्पणी के प्रश्न :

१. महेशनाथ २. मंगल ३. सुरेश ४. भूँगी

-प्रस्तुति
सोफिया डायस
मिलाग्रिस कालेज, कल्याणपुर

****

4. मेहमान

– राजेंद्र यादव

कहानीकार का परिचय :

राजेंद्र यादव जी हिन्दी नई कहानी के प्रवर्तक हैं। उनका जन्म 28 अगस्त, 1929 में आगरा में हुआ था। 1951 में आगरा विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में एम.ए. (हिन्दी) करने के उपरांत लेखन कार्य को ही अपनी जीविका का माध्यम बनाया। उनकी पहली कहानी 'प्रतिहिंसा' 1947 में 'कर्मयोगी' में प्रकाशित हुई। 'आवाज तेरी है' नामक उनकी एक कविता संकलन भी है। उनकी कहानियाँ, उपन्यास, संस्मरण, रेखाचित्र, आलोचना, संपादकीयों एवं अनुवादों की कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 1964 में उन्होंने अक्षर प्रकाशन प्रा.लि.की स्थापना की जिसमें कई रचकारों-अज्ञेय, कमलेश्वर, मोहनराकेश, राही मासूम रजा आदि की महत्वपूर्ण किताबों का प्रकाशन हुआ। उन्होंने 1986 में अक्षर प्रकाशन से किताबों का प्रकाशन बंद कर दिया तथा प्रेमचंद द्वारा स्थापित 'हंस' पत्रिका का पुनः प्रकाशन शुरु किया। आप 27 वर्ष तक हंस पत्रिका के सफल संपादक रह चुके हैं। आपको बिहार सरकार द्वारा 'शिवपूजन सहाय सम्मान' हिन्दी अकादमी दिल्ली के 'शलाका सम्मान' शब्द साधक सम्मान और उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा 'यशभारती' पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

हिन्दी उपन्यास एवं कहानी साहित्य के क्षेत्र में उनका चर्चित स्थान है। मूलतः आप हिन्दी साहित्य एवं साहित्यिक पत्रिका के एक महत्वपूर्ण स्थंभ हैं। असल में नई कहानियाँ जीवन की पहलू हैं, वहाँ जीवन की किसी न किसी यथार्थ पहल की बात होती हैं। अपनी कहानियों के द्वारा राजेंद्र यादव जी ने समाज के सूक्ष्म तथ्यों एवं विकारों को सबके सामने रखा। उनकी कहानियाँ सही अर्थ में सार्वकालिक हैं जो समाज की सही तस्वीर सबके सामने रखने में सफल हुई हैं।

देवताओं की मूर्तियाँ, खेल खिलौने, जहाँ लक्ष्मी कैद है, अभिमन्यु की आत्महत्या, छोटे-छोटे ताजमहल, किनारे से किनारे तक, टूटना, ढोल और अपने कर, चौखटे तोडते त्रिकोण, वहाँ तक पहुँचने की दौड़, अनदेखे अनजाने पुल, हासिल और अन्य कहानियाँ, श्रेष्ठ कहानियाँ, प्रतिनिधि कहानियाँ (कहानी संग्रह) सारा आकाश, उखडे हुए लोग, शह और मात, एक इंच मुस्कान (पत्नी मन्नू भंडारी के साथ), मंत्रविद्ध और कुलटा उपन्यास, कांटे की बात (12 खंड) कहानी अनुभव और अभिव्यक्ति, उपन्यास स्वरूप और संवेदना (समीक्षा निबंध विमर्श) आदमी की निगाह में औरत, वे देवता नहीं हैं, एक दुनिया : समानांतर, कथाजगत की बागी मुस्लिम औरतें, वक्त है एक प्रेम का, औरत उत्तर कथा, पितृसत्ता के नये रूप, पच्चीस बरस पच्चीस कहानियाँ, मुबारक पहला कदल, (संपादन), औरों के बहाने (व्यक्ति चित्र) मुड मुड के देखता हूँ (आत्मकथा) राजेंद्र यादव की रचनावली (15 खंड)

प्रेमचंद द्वारा स्थापित कथा-मासिक 'हंस' के अगस्त, 1986 से 27 अक्तूबर 2013 तक सफल संपान। चेकव, तुर्मनेव, कामू आदि लेखकों की कई कालजयी कृतियों का अनुवाद

कहानी का परिचय :

प्रस्तुत कहानी में एक मध्यवर्गीय आदमी की भीतरी हलचल का सटीक चित्रण किया गया है। इस कहानी का नायक एक मध्यवर्गीय व्यक्ति है जो हीनता-ग्रंथि का शिकार है। इसे अपन सब कुछ तुच्छ, हीन और कमीना लगने लगता है। एक उच्च वर्गीय अतिथि के घर आने पर कथा नायक की मानसिक उथल-पुथल का जीता जागता चित्र यहाँ दर्शाया गया है। यहाँ स्पष्टतः हीनता ग्रंथी का शिकार मध्यवर्गीय व्यक्ति की मनोदशा का परिचय है। कहानी का नायक मन ही मन अपने घर में आये एक विशेष मेहमान की संभावना से ही परेशान है। इस बात का पता हमें कहानी के अंत में चलता है कि असल में अभी कोई मेहमान आया नहीं है, किंतु वह मन ही मन ऐसी कल्पना कर रहा है कि ऐसा हो गया तो क्या होगा, कैसा होगा। कथानायक को अपने घर की हर चीज मामूली सी लगने लगती हैं। उसे यहाँ तक की अपना

व्यक्तित्व, अपनी पत्नी का व्यक्तित्व और अपने बच्चे का व्यक्तित्व एवं उन सबका रहन-सहन भी। लेखक ने विस्तृत विवरणों के एवं गहरी मनोवैज्ञानिक समझ के साथ कहानी में एक मध्यवर्गीय आदमी का मानसिक द्वंद्व एवं आत्मशंकाओं का सजीव चित्रण किया है। कथानायक की मनस्थिति का परिचय दिलाते हुए दुनिया भर के मध्यवर्गीय घर एवं गृहस्वामी की व्यथा, पीड़ा का सही चित्र खींचा है।

कहानी का सार एवं मूल्यांकर :

इस कहानी में कथानायक हीनता ग्रंथि का शिकार है, वह अपने तनाव को इस कथन से व्यक्त करता है – 'वे आयेंगे, इस बात का तनाव मेरे ऊप्र सुबह से ही सवार था।' स्पष्ट है उसके तनाव के पीछे का कारण उसके घर में आनेवाला अतिथि है, जो उच्चवर्गीय है, उसकी नज़रे में उनका सबकुछ श्रेष्ठ है, सुपीरियर है। उसे अपना सबकुछ हीन लगने लगता है, यही उसकी परेशानी है। लपककर दरवाजा खोलना, पत्नी पुष्पा के बारे में ऐसा सोचना कि 'इस कमबख्त को अहसास ही नहीं है कि हमारे यहाँ कितना बड़ा आदमी आया है।' उसने अपने घर को बड़े और भले ढंग से सजाया था। उसने घर की सारी व्यवस्था उलट पलट दि थी। हर चीज को उन्होंने गिरा दिये थे जो उन्हें खुद फूहड लगते थे। ऐसी सुंदर सजावट के बावजूद भी उसे लगता था कि उसका घर उन जैसे बड़े मेहमान के लायक नहीं है। उसे अपनी बैठक, अपनी मेज कुर्सियाँ, सारा घर बहुत ही बेकार और साधारण लगता है। घर में इतना काया-पलट करने पर भी उसे अपना घर एक फटीचर क्लर्क का लगता है। ऐसा लगना उसकी मानसिक समस्या (हीन भावना का शिकार) का ध्योतक है। उसे यहाँ तक लगता है कि कुर्सियों को इनके घर के इंधन के काम में लिया जाना होगा। इनको नौकरों के घर में घर से लाख दर्जे अच्छे होंगे... यह उनकी महानता है। कथानायक की मानसिक हरकतों को देखकर पाठकों को उसके प्रति सहानुभूति होती है। हमें लगता है कि दुनिया के लाखों करोड़ों लोग ऐसी मनोदशा के कारण त्रस्त है, दुखी हैं। ऐसे हजारों लाखों मध्यवर्गीय घर अशांति का बैचैनी का देश गन गये हैं। कहानी के लेखक

ने नायक की मनस्थिति को दर्शाते हुए यह इशारा किया है कि यह मध्यवर्गीय गृह एवं गृहस्वामी की असली समस्या है।

कहानी का नायक अपनी बचैनी छिपाने के लिए बालकनी में घूम आता और दियासलाई की सींक को बाहर फेंकता है। पत्नी पुष्पा के प्रति उसकी प्रतिक्रिया उसकी मनस्थिति की परिचायिका है। वह कहता है – "पुष्पा तुम भी अजीब औरत हो, वे आ गए हैं और तुमने अभी तक अपनी साडी भी नहीं बदली ?"

आए अतिथि जब नायक से उसके पुत्र और पत्नी के बारे में पूछते तो वह अपनी अस्वस्थ मानसिकता का पूरा परिचय देता है। तब हमें अवश्य लगता है कि वह सही अर्थ में मनोरोगी है। अपने पुत्र के बारे में उसकी प्रतिक्रिया उसका परिचय करनाने में काफी है, वह कहने लगता है – "जी वह स्कूल गया है। पढ़ता है। क्या करें, यहाँ कोई अच्छा स्कूल भी नहीं है। हमने तो बहुत कोशिश की। हालांकी मैंने उसे अपनी हैसियत से ऊँचे स्कूल में दाखिल करवा रखा था। जिस स्कूल में इस समय वह था, उसे लेकर अपनी तरह मुझे गर्व था, लेकिन इस समय मुझे लगा जैसे वह अनाथालय में जाता हो।"

अतिथि के बारे में कहानी की नायिका के विचार स्वस्थ हैं। वह सोचती है – "मैं कह्ती हूँ कि आरे हैं तो आए। उनका घर है। उसे लेकर इतना तूफान मचाने की क्या जरूरत है।" वह सीधा कहती है – "मैं तो आपके लिये कुछ भी खास तो नहीं करूँगी। जैसे हम खाते हैं उसी को खिलाते हैं। पति की मानसिकता का नतीजा यह एक हीनता ग्रंथि शिकार आदमी का वास्तविक रूप है। निस्संदेह हम कह सकते हैं कि यहाँमध्यवर्गीय यथार्थ मनोवैज्ञानिक तथ्य उभरकर सामने आया है। पूरी कहानी के केंद्र में उसकी मानसिकता है। घर के वातावरण को कलुषित एवं विनष्ट करने में उसकी प्रत्येक प्रतिक्रिया अवश्य सफल होती है। आगे बढ़कर हम देखते हैं कि मिठाई नमकीन आदि चीज़े मुहल्ले की सबसे अच्छी दुकान से लाने के बावजूद भी वह

एक्दम घटिया एवं बदसूरत लगता, उनमें बाजर की गंध आना, घर में ढंग के प्लेट नहीं है ऐसा महसूस करना इत्यादि हरकत एक अस्वस्थ मन की ओर इशारा है। फिर अंदर जाकर गुसलखाने झाड़ु से धो देना, साबुनदानी साफ करना, तेल की शीशियों को करीने से लगाना, नया साबुन खोलकर रखना, पटरा साफ करना, टब वाशबेसिन, कमोड सब चीज़ें असुंदर घटिया किस्म के लगना, अपनी मजबूरी से बीच-बीच में साँस लेना एक मध्यवर्गीय दिमाग की तस्वीर है। लेखक ऐसी तस्वीर पाठकों के सम्मुख रखने के द्वारा मध्यवर्गीय समाज का एक असली चित्रण करने में कामयाब दिखते हैं।

पुष्पा इस बीच उनसे काफी खिलकर, हँस-हँसकर बातें कर रही थी तथा जब वे उसकी तरफ देखकर बातें कर रहे थे तो उसे लगता है – "आपको पता नहीं है, यह कितनी उजड्ड और गँवार है। न किसी को महान मानती है, न मेहमान। वह इज्जत करने का भाव दिखा रही है, वरना यह तो आपको सिर पर सवार हो जायेगी, यह एक बार यदि मुँह लग गई तो किसी की महानता नहीं रखती। यदि मैं शुरु से ही सख्ती रखता तो वह एकदम सीधी रहती।" पत्नी के प्रति ऐसा भाव रखना अवश्य एक अस्वस्थ मन का सही चित्र है। आगे बढ़कर पत्नी पुष्पा के प्रति फूहड़ और कमीनी लगना, उसकी साड़ी लपेटने का ढंग अखरना, देखकर चंदा माँगने आनेवाली शरणार्थी औरतों जैसी लगना, वह उसकी तिलभर भी इज्जत नहीं करती लगना आदि सब एक अस्वस्थ मनोविकार की सही तस्वीर है। आगे बढ़कर उसके साथ टैक्सी पर जाते वक्त मन में तरह-तरह के भाव जगना कथा नायक के मन का असली चित्र है।

टैक्सी पर बैठे- बैठे पत्नी पुष्पा पर जब वह क्रोध प्रकट करना, उनसे क्या बातें करूँ-क्या न करूँ ? इस असमंजस में पड़ जाना आदि उसकी बहुत दुःखदायी प्रतिक्रियाएँ हैं। सोचता है – "इन बीबी बच्चों ने मुझे किसी भी लायक नहीं छोड़ा, मैं जो कुछ भी बोलूँ, वह निहायत ही बेकार होगा, सोचेंगे, यह टकियल क्लर्क ही।" गँवार, जाहिल..... मैं जूती बराबर नहीं हूँ..... आदि ऐसा लगना अवश्य एक हीन ग्रंथी शिकार आदमी को मात्र संभव है।

निष्कर्ष : यह कहा जाता है कि नई कहानी के प्रवर्तक राजेंद्र यादव जी की प्रस्तुत कहानी मध्यवर्गीय घर एवं गृहस्वामी की मानसिकता का सही परिचय देती है। यहाँ के कथा नायक की हर प्रितिक्रिया उसे हीन ग्रंथी के शिकार आदमी के रूप में चित्रित करने में सफल हुई है। पूरी कहानी के केंद्र में उसकी मनोदशा है, जो मध्यवर्गीय समस्या को प्रतिबिंबित करता है। सरल, बोधगम्य भाषा का प्रयोग, विचारों को आम आदमी तक पहुँचाने में सफल हुआ है। अपनी सोद्देश्यता, सही मनोवैज्ञानिक चित्रण कहानी को और सफल, आकर्षक एवं प्रभावी का रूप देने में सफल हुआ है। वापसई, नये मेहमान, चीफ की दावत जैसी रचनाओं में जैसे मध्यवर्गीय मानसिकता का सही दर्शन हुआ वैसे ही प्रस्तुत कहानी में लेखक ने मध्यवर्गीय परिवार की कथा सुनाकर वहाँ का चित्रण उजागर करने के द्वारा बहुत बड़ा उपकार किया है। अंत में कह सकते हैं कि राजेंद्र यादव की प्रस्तुत कहानी कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र चित्रण, भाव-भाषा, उद्देश आदि कहानी के तत्वों की नज़र से भी सफल है, सार्थक है, सार्वकालिक है एवं मध्यवर्गीय समस्याओं का आईना है।

एक अंक के प्रश्न :

1. मेहमान कहानी का कहानिकार कौन है ? -राजेंद्र यादव।
2. राजेंद्र यादव की पठित कहानी का नाम लिखिए। -मेहमान।
3. मेहमान का नायक किस ग्रंथी का शिकार है ? - हीन या हीनता ग्रंथी।
4. मेहमान कहानी के नायक की पत्नी का नाम क्या है ? - पुष्पा
5. पुष्पा किस कहानी का पात्र है ? -मेहमान।

निबंधात्मक प्रश्न :

1. 'मेहमान कहानी एक हीनता ग्रंथी के शिकार मध्यवर्गीय गृहस्वामी की मानसिकता का परिचय देती है।" – पठित कहानी के आधार पर इस बात का समर्थन कीजिए

2. 'मेहमान' कहानी मध्यवर्गीय मानसिकता का सही आईना है।" पठित कहानी के आधार पर इस कथन की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

3. 'मेहमान' कहानी का सार लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

टिप्पणी के प्रश्न :

1.'मेहमान' कहानी का आशय।

2. मेहमान का नायक।

3. पुष्पा।

-प्रस्तुति

डॉ.मंजुनाथ उडुपा,

हिन्दी विभागाध्यक्ष, श्री वेंकटरमण स्वामी कॉलेज, बंटवाल

---

5. हीलीबोन की बतखें

-अज्ञेय

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' (7 मार्च, 1911 - 4 अप्रैल, 1987) को कवि, शैलीकार, कथा साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण मोड़ देने वाले कथाकार-, ललितनिबन्धकार-, सम्पादक और अध्यापक के रूप में जाना जाता है।

इनका जन्म 7 मार्च 1911 को उत्तर प्रदेश के कसया, पुरातत्व खुदाई-शिविरमेंहुआ। बचपन लखनऊ, कश्मीर, बिहार और मद्रास मेंबीता।बी.एससी.करके अंग्रेजी में एम करते समय क्रांतिकारी .ए.आन्दोलन से जुड़कर बम बनाते हुए पकड़े गये और वहाँ से फरार भी हो गए। सन् 1930 ई के अन्त में पकड़ लिये गये। अज्ञेय . प्रयोगवाद एवं नई कविता को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने वाले कवि हैं। अनेक जापानी हाइकु कविताओं को अज्ञेय ने अनूदित किया। बहुआयामी व्यक्तित्व के एकान्तमुखी प्रखर कवि होने के साथ साथ वे एक अच्छे-फोटोग्राफर और सत्यान्वेषी पर्यटक भी थे।

जीवन परिचय :

प्रारंभिकशिक्षा-दीक्षा पिता की देखरेख में घर पर ही संस्कृत, फारसी, अंग्रजी और बांग्ला भाषा व साहित्य के अध्ययन के साथ हुई। 1925 में पंजाब से एंट्रेंस की परीक्षा पास की और उसके बाद मद्रास क्रिस्चन कॉलेज में दाखिल हुए। वहाँ से विज्ञान में इंटर की पढ़ाई पूरी कर 1927 में वे बी करने के लिए लाहौर के फॅरमन कॉलेज के छात्र बने। .एससी.1929 में बी. एससी में उन्होंने अंग्रेजी विषय लिया .ए. करने के बाद एम .; पर क्रांतिकारी गतिविधियों में

हिस्सा लेने के कारण पढ़ाई पूरी न हो सकी। 1930 से 1936 तक विभिन्न जेलों में कटे। 1936-37 में सैनिक और विशाल भारत नामक पत्रिकाओं का संपादन किया। 1943 से 1946 तक ब्रिटिश सेना में रहे ; इसके बाद इलाहाबाद से प्रतीक नामक पत्रिका निकाली और ऑल इंडिया रेडियो की नौकरी स्वीकार की। देश विदेश की यात्राएं कीं। जिसमें उन्होंने- कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से लेकर जोधपुर विश्वविद्यालय तक में अध्यापन का काम किया। दिल्ली लौटे और दिनमान साप्ताहिक, नवभारत टाइम्स , अंग्रेजी पत्र वाक् और एवरीमैंस जैसी प्रसिद्ध पत्र - पत्रिकाओं का संपादन किया।1980 में उन्होंने वत्सलनिधि नामक एक न्यास की स्थापना की जिसका उद्देश्य साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में कार्य करना था। दिल्ली में ही 4 अप्रैल 1987 को उनकी मृत्यु हुई। 1964 में आँगन के पार द्वार पर उन्हें साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ और 1978 में कितनी नावों में कितनी बार पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार।

प्रमुख कृतियां :

कविता संग्रह :-भग्नदूत 1933, चिन्ता 1942, इत्यलम्1946, हरी घास पर क्षण भर 1949, बावरा अहेरी 1954, इन्द्रधनुष रौंदे हुये ये 1957, अरी ओ करुणा प्रभामय 1959, आँगन के पार द्वार 1961, कितनी नावों में कितनी बार)1967), क्योंकि मैं उसे जानता हूँ)1970), सागर मुद्रा)1970), पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ)1974), महावृक्ष के नीचे)1977), नदी की बाँक पर छाया)1981), प्रिज़न डेज़ एण्ड अदर पोयम्स अंग्रेजी) में,1946)। कहानियाँ:-विपथगा 1937, परम्परा 1944, कोठरी की बात 1945, शरणार्थी

1948, जयदोल 1951 उपन्यास:-शेखर एक जीवनी - प्रथम भाग (उत्थान)1941, द्वितीय भाग(संघर्ष)1944, नदी के द्वीप 1951, अपने अपने अजनबी 1961 । यात्रा वृतान्त :- अरे यायावर रहेगा याद ? 1943,एक बूँद सहसा उछली 1960। निबंध संग्रह : सबरंग, त्रिशंकु, आत्मनेपद, आधुनिक साहित्य एक आधुनिक परिदृश्य :, आलवाल। आलोचना:- त्रिशंकु 1945, आत्मनेपद 1960, भवन्ती 1971, अद्यतन 1971 ई।. संस्मरण: स्मृति लेखा डायरियां: भवंती, अंतरा और शाश्वती। विचार गद्य: संवत्स7रनाटक: उत्तरप्रियदर्शी जीवनी: रामकमल राय द्वारा लिखित शिखर से सागर तक | संपादित ग्रंथ निबन्ध) आधुनिक हिन्दी साहित्य -: (संग्रह1942, तार सप्तक (कविता संग्रह (1943, दूसरा सप्तक (कविता संग्रह (1951, तीसरा सप्तक (कविता संग्रह (, सम्पूर्ण 1959, नये एकांकी 1952, रूपांबरा 1960। उनका लगभग समग्र काव्य सदानीरा नाम से संकलित हुआ है तथा अन्यान्य विषयों पर लिखे गए (दो खंड) " सारे निबंधसर्जना और सन्दर्भ" तथा "केंद्र और परिधि" नामक ग्रंथो में संकलित हुए हैं। विभिन्न पत्रपत्र-िकाओं के संपादन के साथ साथ अज्ञेय ने- तारसप्तक, दूसरा सप्तक और तीसरा सप्तक जैसे युगांतरकारी काव्य संकलनों का भी संपादन किया तथा पुष्करिणी और रूपांबरा जैसे काव्य संग्रहों के भी संपादक हैं। -संकलनों का भी। वे वत्सलनिधि से प्रकाशित आधा दर्जन निबंध-

प्रख्यात साहित्यकार अज्ञेय ने यद्यपि कहानियां कम ही लिखीं और एक समय के बाद कहानी लिखनाबिलकुल बंद कर दिया, परंतु हिन्दी कहानी को आधुनिकता की दिशा में एक नया और स्थायी मोड़ देने का श्रेय भी उन्हीं को प्राप्त है। निस्संदेह वे आधुनिक साहित्य के एक शलाका - पुरूष थे जिसने हिंदी साहित्य में भारतेंदु के बाद एक दूसरे आधुनिक युग का प्रवर्तन किया।

अज्ञेय रचनावली अज्ञेय रचनावली के १८ खंडों में उनकी समस्त रचनाओं को (काव्य, कहानियाँ, उपन्यास, भूमिकाएँ, यात्रावृत्त-, डायरी, संस्मरण, नाटक, निबन्ध, साक्षात्कार और पत्र, अनुवाद) संग्रहित करने का प्रयास किया गया है। इसके संपादक कृष्णदत्त पालीवाल हैं।

पुरस्कारसम्मानसाहित्य/- अकादमी, भारतीय ज्ञानपीठ

हीलीबोन की बतखें- :

अज्ञेय की इस मनोवैज्ञानिक कहानी में मुख्य पात्र है, एक स्त्री बोन्-हीली –, जो पर्वतीय क्षेत्र के सौंदर्य में अपने अकेलेपन को भोगने के लिए अभिशप्त है। कभी उसने प्यार भी पाया था , पर उसने स्वयं ही तो अकेलेपन का चयन भी किया था। उस अकेलेपन से उपजे खालीपन को दूर करने के लिए हीली बत्तखें पालती है , जिनके अंडों से उसके जीवन यापन का खर्च भी निकल-

आता है। वहाँ के लोग उसके बारे में कहते हैं कि वह सुंदर है, पर स्त्री नहीं है। वह बाँबी क्या , जिसमें साँप नहीं बसता ? हीली अपने बत्तखों पर गर्व करती हैं कि इतनी सुंदर बत्तखें ख़ासिया प्रदेश में और नहीं हैं। एक दिन अचानक परिवर्तन आता है। हीली की बत्तखें मारी जाती हैं हर...

तीसरे दिन और वह कुछ कर नहीं पाती। उसके चार बत्तखें-दूसरेइसी तरह मारी जाती हैं। आखिरकार हत्यारे की पहचान होती है। हीलीबोन् की बत्तखों को लोमड़ी मार ले जाती- थी। हीली बोन् के मरते हुए बत्तखों की बात जानकर एक फौजी अफसर उसकी सहायता को आता-

है। हीली को विश्वास होता है कि वह लोमड़ी को जरूर मार देगा। और उसी रात बंदूक की आवाज भी होती है तथा सुबह कैप्टन दयाल आकर कहते हैं कि शिकार जख़्मी हो गया है। फिर वे उसे दिखाने ले जाते हैं।

हीली को कैप्टन दयाल एक दृश्य दिखाते हैं। अज्ञेय लिखते हैं एक- अंधकार में कई" – "जोड़े अंगारे से चमक रहे थे। हीली जो दृश्य देखती है, उसका वर्णन अज्ञेय ने जिस तरह किया है, आप भी देखें कास के – खोह की देहरी पर लोमड़ी का प्राणहीन आकार दुबका पड़ा था" – - सी पूंछ उसकी रानों को ढंक रही थी जहाँ गोली का जख्म होगा। भीतर शिथिल-फूल की झाड़ गात लोमड़ी उस शव पर झुकी थी, शव के सिर के पास मुँह किये मानो उसे चाटना चाहती हो और फिर सहमकर रूक जाती हो। लोमड़ी के पाँवों से उलझते हुए तीन छोटे छोटे बच्चे कुनमुना- रहे थे। उस कुनमुनाने मे भूख की आतुरता नहीं थी, न वे बच्चे लोमड़ी के पेट के नीचे घुसड़ पुसड़- "करते हुए भी उसके थनों को ही खोज रहे थे।

कैप्टन दयाल कहते हैं यह भी तो डाकू होगी""- कोई उत्तर नहीं मिलने पर उन्होंने फिर कहा फिर पीछे हीली को न देख उसी तरफ चल देते "तो बच्चे पाले जा सकें। – इसे भी मार दें" – हैं। वहीं उस करुण दृश्य को झेलने में असमर्थ हीली उन्माद की तेजी से दौड़ते हुए सीधे बत्तखों एक करके अपन- के बाड़े में पहुंचती है तथा एकै ग्यारह बत्तखों को से गला काटकर 'डाओ' कहती है और उसकी आँखों में एक 'हत्यारा' हत्या कर देती है। वह सहानुभूति दिखाते कैप्टन को सूनापन शेष रह जाता है।

समीक्षा:

अज्ञेय ने अपनी कहानियों में सदा मध्यवर्गीय स्त्री की घुटन, पीड़ा, एकरसता, ऊब और परिवर्तनहीनता को उघाड़ा है। 'हीलीबोन की बत्तखें'कहानी में उन्होंने नारी मनोविज्ञान को प्रस्तुत किया है। कहानी की पात्र उम्र के चैंतिसवें वर्ष में अकेली है। उसकी मनोव्यथा 'हीली' -और मनोभावों को अज्ञेय एक कुशल शिल्पकार की भांति चित्रित कर दृश्यात्मक बनाते हैं। स्त्री पुरूष के काम सम्बंध का एक सामाजिक पहलू संतान होती है। संतान का अभाव जीवन की"

‘‘ सार्थकता पर ही प्रश्नचिन्ह खड़ा कर देता है। ‘हीली अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए ‘ बत्तखें पालती है। आये दिन एक लोमड़ी बत्तखों का शिकार कर लेती है। बत्तखों का शिकार करने वाली लोमड़ी केप्टन दयाल की गोली का शिकार हो जाती है। जब लोमड़ी का ‘हीली’ पुथल होने लगती है। वह सोचती है कि- नितांत घरेलू दृश्य देखती है तो उसके अंतर्मन में उथल शिकार कर परिवार पालन उसका कर्म है , ‘गीता जंगली’’ में भी कर्म को सर्वोपरी माना है। ‘ पारिवारिकता के तहतअगर वह बत्तखें खाती है तो वह डाकू नहीं हो जाती। लेकिन केप्टन ‘‘ दयाल ने तो अपने शौक के लिये शिकार किया है, डाकू लोमड़ी नहीं है, केप्टन दयाल है। वह केप्टन से कहती है ‘‘दूर हटो हत्यारे’’। ‘हीली की वैचारिकता उसे चरित्र के शिखर पर बैठा ‘ देती है। उसे लोमड़ी के परिवार को हुआ अभाव अपने अभाव जैसा लगता है तथा सभी बत्तखों को मारकर अकेले हो जाने की तैयारी उसकी नारी संवेदना है जिसका तादात्म्य मादा लोमड़ी से जुड़ जाता है। ज्ञात हो कि कहानी की शुरुआत में ही एक वाक्य आता है कि हीली सुंदर है , पर स्त्री नहीं है। प्रस्तुत कहानी में जीवन की विडंबना एवं गहरी मानवीय संवेदना के चित्रण में अज्ञेय सफल रहे हैं। पर प्रश्न रह जाता है कि बतखों की सामूहिक हत्या में “नारी की संवेदना” कहाँ स्थान पाती है ?

एक अंक के प्रश्न

1. हिलीबोनकीबतखेंकहानी के लेखक का नाम लिखिए ।
   -सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय
2. हीलीबोनयिर्वाकिस जनजाति की स्त्री थी ?–ख़ासी जनजाति
3. खू-ब्लाईकाक्याअर्थहै? –खासिया भाषा में ‘राम राम’
4. हीलीकी बतखोंकोकौन मारता था ? –लोमड़ी
5. फौजी का नाम क्या है ? –कैप्टन दयाल

निबंधात्मक प्रश्न :

1. हीलीबोन की बतखें- कहानी का सारांश लिखकर विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
2. हीलीबोन यिर्वा का चरित्र चित्रण कीजिए।

टिप्पणी के प्रश्न :

1. कैप्टन दयाल । 2. हीलीबोन यिर्वा।

प्रस्तुति

नागभूषण एच.जी.

हिन्दी विभागाध्यक्ष, श्री भुवनेंद्र कालेज, कार्कल

****

6. हत्यारे

-अमरकांत

अमरकांत (1925-17 फ़रवरी 2014) हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद के बाद यथार्थवादी धारा के प्रमुख कहानीकार थे। यशपाल उन्हें गोर्की कहा करते थे। अमरकान्त का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के नगरा कस्बे के पास स्थित भगमलपुर गाँव में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए. किया। इसके बाद उन्होंने साहित्यिक सृजन का मार्ग चुना। बलिया में पढ़ते समय उनका सम्पर्कस्वतन्त्रता आंदोलन के सेनानियों से हुआ। सन् १९४२ में वे स्वतन्त्रता-आंदोलन से जुड़ गए। शुरुआती दिनों में अमरकान्ततरतम में ग़ज़लें और लोकगीत भी गाते थे। उनके साहित्य जीवन का आरंभ एक पत्रकार के रूप में हुआ। उन्होंने कई पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया। वे बहुत अच्छी कहानियाँ लिखने के बावजूद एक अर्से तक हाशिये पर पड़े रहे। उस समय तक कहानी-चर्चा के केन्द में मोहनराकेश, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव की त्रयी थी। कहानीकार के रूप में उनकी ख्याति सन् १९५५ में 'डिप्टी कलेक्टरी' कहानी से हुई।

अमरकांत के स्वभाव के संबंध में रवीन्द्र कालिया लिखते हैं- "वे अत्यन्त संकोची व्यक्ति हैं। अपना हक माँगने में भी संकोच कर जाते हैं। उनकी प्रारम्भिक पुस्तकें उनके दोस्तों ने ही प्रकाशित की थीं।...एक बार बेकारी के दिनों में उन्हें पैसे की सख्त जरूरत थी , पत्नी मरणासन्न पड़ी थीं। ऐसी विषम परिस्थिति में प्रकाशक से ही सहायता की अपेक्षा की जा सकती थी। बच्चे छोटे थे। अमरकान्त ने अत्यन्त संकोच , मजबूरी और असमर्थता में मित्र प्रकाशक से रॉयल्टी के

कुछ रुपये माँगे, मगर उन्हें दो टूक जवाब मिल गया , ' पैसे नहीं हैं। ' अमरकान्तजी ने सब्र कर लिया और एक बेसहारा मनुष्य जितनी मुसीबतें झेल सकता था, चुपचाप झेल लीं।"सन् १९५४ में अमरकान्त को हृदय रोग हो गया था। तब से वह एक जबरदस्त अनुशासन में जीने लगे। अपनी लड़खड़ाती हुई जिन्दगी में अनियमितता नहीं आने दी। भरसक कोशिश की , तनाव से मुक्त रहें। जवाहरलालनेहरू उनके प्रेरणास्रोत रहे हैं। वे मानते थे कि नेहरू जी कई अर्थों में गांधीजी के पूरक थे और पंडित नेहरू के प्रभाव के कारण ही कांग्रेस संगठन प्राचीनता और पुनरुत्थान आदि कई प्रवृतियों से बच सका। 17 फ़रवरी 2014 को उनका इलाहाबाद में निधन हो गया।

रचनाएँ :

'जिंदगी और जोंक ' , 'देश के लोग' ,'मौत का नगर' ,'मित्र मिलन तथा अन्य कहानियाँ' , 'कुहासा', 'तूफान', 'कला प्रेमी', 'प्रतिनिधि कहानियाँ', 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' , 'एक धनी व्यक्ति का बयान', 'सुख और दुःख के साथ' , 'जांच और बच्चे', 'अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियाँ' (दो खंडों में), 'औरत का क्रोध'। **उपन्यास**'सूखा पत्ता','काले-उजले दिन', 'कंटीली राह के फूल' , 'ग्राम सेविका', 'पराई डाल का पंछी' बाद में 'सुखजीवी' नाम से प्रकाशित , 'बीच की दीवार' , 'सुन्नर पांडे की पतोह', 'आकाश पक्षी', 'इन्हीं हथियारों से', 'विदा की रात', लहरें। **संस्मरण** कुछ यादेंकुछ बातें;दोस्ती। **बाल साहित्य-** 'नेऊर भाई', 'वानर सेना', 'खूँटा में दाल है', 'सुग्गी चाची का गाँव', 'झगरू लाल का फैसला', 'एक स्त्री का सफर', 'मँगरी', 'बाबू का फैसला', दो हिम्मती बच्चे। साहित्यिक वैशिष्ट्य -अमरकांत जी सन 1925 के दौर की नई कहानी के अग्रणी कथाकार

हैं। उनका लेखन उनके जीवन संघर्ष का लेखन है। वे प्रेमचंद की कथा परंपरा में विकसित प्रगतिशील चिंतन धारा के कहानीकार हैं। उनकी कहानियों में मध्यवर्गीयऔर निम्नवर्गीयजीवन की पक्षधरता का चित्रण मिलता है। वे भाषा की सृजनात्मकता के प्रति सचेत थे। अपनी रचनाओं में अमरकांत व्यंग्य का खूब प्रयोग करते हैं। उनकी कहानियों में उपमा के भी अनूठे प्रयोग मिलते हैं, जैसे, ' वह लंगर की तरह कूद पड़ता ', ' बहस में वह इस तरह भाग लेने लगा, जैसे भादों की अँधेरी रात में कुत्ते भौंकते हैं ', ' उसने कौए की भाँति सिर घुमाकर शंका से दोनों ओर देखा।', 'आकाश एक स्वच्छ नीले तंबू की तरह तना था।', 'लक्ष्मी का मुँह हमेशा एक कुल्हड़ की तरह फूला रहता है।' 'दिलीप का प्यार फागुन के अंधड़ की तरह बह रहा था ' आदि- आदि।

पुरस्कार / सम्मान उनकी रचनाओं के लिए उन्हें सोवियतलैंडनेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उत्तर प्रदेश संस्थान की ओर से भी उन्हें पुरस्कार प्रदान किया गया था।

'हत्यारे' कहानी का विवेचन :

सन् 1962 में अमरकांत की कहानी 'हत्यारे'की रचना हुई थी । यह नेहरू युग के अवसान और उसके मोह भंग का संधिकाल था और अगर हम ध्यान दें तो यह नई कहानी और अकहानी के संधिकाल की भी कहानी है और इस लिहाज खुद यह कहानी अमरकांत की कहानी यात्रा में एक की तरह है। 'ब्रेक'उनकी कहानियों में मोहभंग के बावजूद लड़ता हुआ निम्न मध्यम वर्ग और सर्वहारा है। उनकी कहानियों में हमारे आस-पास के उच्च वर्ग के , मध्यम वर्ग के और निम्नवर्गीय बस्तियों गलियों से गाँव-कस्बों के लोग दाखिल हो जाते हैं। अमरकांत ने अपनी कहानियों में ऐसे चरित्रों को उजागर किया है, जो अपनी धूर्त और चालाक हरकतों से सीधे-सादे लोगों का शोषण करते हैं। व्यंग्य के माध्यम से अमरकांत ने इन पात्रों की जीवंत स्थिति को

प्रभावकारी ढंग से प्रस्तुत किया है। अमरकान्त की सर्वाधिक सहानुभूति शोषण का शिकार बने निम्नवर्गीय पात्रों के साथ है। उनके चरित्र हमारे समाज का एक यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हैं।

हत्यारे- कहानी में दो नायक हैं या खलनायक हैं। खलनायकत्व नायकत्व प्राप्त कर रहा है। दोनों नायकों को यदि गौर से देखें तो एक गोरा है , ऊंचा है। दूसरा सांवला है , ठिगना है। दोनों एक ही तरह की वेशभूषा में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के आस पास किसी बाजार में- टहल रहे होते हैं और उनकी बातचीत जब शुरु होती है तो ठेठ लहज़े में, 'हलो, सन इतना लेट..! क्यों, बेटे?' इस तरह की एक बातचीत शुरू होती है। समाज वादी विमर्श की भाषा में बात करें तो जो सांवला है वह भिन्न वर्ग का है , क्योंकि कहानी में कहीं भी ऐसे (बयान) कहीं स्टेटमेंट्स- '! तुमको सेक्रेटेरियट का भंगी बनाऊंगा' आते हैं किगोरा गुरु है। सांवला चेला है। गुरु उसको शिक्षित करता है। ठीक उसी प्रक्रिया में जैसे प्रेमचंद की कहानी "कफन" में घीसू माधव को शिक्षित करता है। हत्यारे कहानी में जब गिलास में दोनों शराब बांटते हैं तो सांवला चुपके से अपनी शराब गोरे के गिलास में डाल देता है। ' (इस पर गोरा कहता है)लेकिन जब तुम इतनी पी नहीं सकते तो अवसर आने पर घूस कैसे लोगे ? जालसाजी कैसे करोगे , झूठ कैसे बोलोगे ? फिर देश की सेवा क्या करोगे, खाक '!सांवला अभी सीख रहा है। औरत के पास जाना अभी तक सीखा नहीं है । और फिर गोरा कहता है , 'आज तो कुछ रचनात्मक कार्य होना चाहिए '!तो रचनात्मक लीडरशिप क्या है ? रिक्शा मजदूरों की बस्ती की तरफ चलता है। बस्ती के शुरु में ही पान की छोटी सी दुकान है। जिस पर पान सिगरेट-तो मिलती ही है रोजमर्रा की और सारी चीजें भी मिलती हैं, और वे दोनों मजदूरों की बस्ती आरम्भ होते ही जो पहली झोपड़ी है उसमें घुस जाते हैं। एक महिला चूल्हे पर खाना बना रही होती है। उसके देखते ही गोरा मुस्कुराकर बोला, 'ये विश्व लोफर संघ के अध्यक्ष हैं। इनको हर तरह से तुम्हें खुश करना है। दोनों औरत के '

साथ सम्बन्ध बनाते हैं। पैसा नहीं देते हैं और जब औरत कहती है, 'लाइए मैं पैसे का खुदरा) '.ले आती हूं (करवा करतो गोरा बोलता है, 'तुम तो पूंजीपति हो तुमको किस बात की कमी ! अरे...है।, तुम देश की महान कार्यकत्री हो, तुम कहाँ कष्ट करोगी?' और दोनों बाहर निकलते हैं। आगे बढ़ते हुए गोरा कहता है कहता है , 'साले जूते निकालकर हाथ में लेलो सांवला बोला ! क्यों'?'...(गोरा कहता है' (भाग साले आर्थिक और सामाजिक क्रांति करने का समय आ गया ! '!हैदोनों भागना शुरु करते हैं। औरत बाहर निकल कर कहती है ' -अरे, लूट लिया हरामी के बच्चों ने '!मजदूरों की बस्ती से कुछ लोग उसके पीछे दौड़ पड़ते हैं। दोनों अरबी घोड़े की तरह सरपट भागे जा रहे हैं। कभी बाएं घूम जाते हैं। कभी दाएं घूम जाते हैं। इतने में मजदूरों का एक लड़का फुर्ती से सांवले की तरफ तीर की तरह बढ़ता चला जाता है और लगता है उसको पकड़ ही लेगा। ऐसे में गुरु गोरा रुक जाता है। जेब से चाकू निकालकर खोल लेता है और पीछा करते हुए आ रहे मजदूर के पेट में घोंप देता है और फिर भाग जाता है। कोलतारी सड़क पर आगे की स्ट्रीट लाइट में दोनों के सुंदर और पुष्ट शरीर पर पसीने की बूंदें छरछरा रही हैंऔर वे फिर न जाने कहां अंधेरे में गुम हो जाते हैं, यह पूरी कहानी है।

इस कहानी में अमरकान्त ने देश के भटके हुए युवाओं की तरफ संकेत किया है। कहानी में जिन दो युवाओं का वर्णन किया गया है, वे न सिर्फ बुद्धिमान हैं बल्कि देश-दुनिया की जानकारी रखनेवाले, विश्वविद्यालय में अध्ययन रत परा-स्नातक छात्र हैं। लेकिन उनके सामने कोई लक्ष्य नहीं है। उन्होंने बातों की एक दुनिया बना ली है और उसी में रहते हुए , हर चीज़ का मज़ाक उड़ाते हुए अपना समय काटते हैं। न उनका कोई जीवन मूल्य है और न ही नैतिकता का कोई बोध। अपने आनंद के लिए वे कुछ भी कर जाते हैं। अमरकान्त की इस कहानी में आज़ादी के

बाद पैदा हुई पीढ़ी की अति स्वच्छंद , दिशाहीन, परम स्वार्थी मनोदशा का व्यंग्य पूर्ण चित्रण किया गया है।

हिंदी के चार आलोचकों ने कहानी के बारे में 'हत्यारे'क्या लिखा है,यह भी विचारने की बात है। विश्वनाथ त्रिपाठी समाजशास्त्रीय , राजनीति के अपराधीकरण से लेकर अपराध के राजनीतीकरण और स्टूडेन्ट पॉलिटिक्स की वह पूरी प्रक्रिया जो जेपी मूवमेंट के भीतर से निकली है उसके के बतौर हत्यारे कहानी की अच्छी व्याख्या करते हैं। लेकिन वह 'रिप्रजेन्टेशन' एक सवाल उठाते हैं कि अमरकांत के पात्र कहीं भी संघर्ष क्यों नहीं करते हैं ? अगर समाज में संघर्ष है तो अमरकांत के पात्र संघर्ष करते हुए क्यों नहीं दिखते। अजीब बात यह है कि ठीक यही आलोचना राजेन्द्र यादव भी अमरकांत के बारे में करते हैं कि अमरकांत की कहानी का कोई भी पात्र संघर्ष नहीं करता है। वहां आस्तित्व की समस्या महत्त्वपूर्ण है , आस्था का प्रश्न महत्त्वपूर्ण नहीं है। लेखकीय आस्था एक ओढ़ी हुई चीज है। मनुष्य के अस्तित्व की लड़ाई ज्यादा महत्त्वपूर्ण है और इसलिए अमरकांत अस्तित्ववादी कथाकार हैं। समाजवादी यथार्थवादी की जो अपेक्षा है वह अमरकांत के ऊपर विश्वनाथ त्रिपाठी की तरफ से और राजेन्द्र (लागू की जाती है) यादव हत्यारे को अस्तित्ववाद की कहानी मान लेते हैं।

सुरेंद्र चौधरी के अनुसार 'हत्यारे' कहानी में हत्या नहीं हुई होती तो यह बहुत महत्त्वपूर्ण कहानी होती। क्यों? क्योंकि हत्या वहां अतिनाटकीयता का प्रयोग मात्र है । जिससे कहानी में रोचकता तो पैदा हुई है लेकिन वह कुछ कहानी में नया नहीं जोड़ती है और यह अच्छा हुआ कि अमरकांत ने आगे ऐसा प्रयोग नहीं किया। उन्होंने कहा है कि जो परिवर्तनकारी प्रक्रिया है उसमें जो प्रच्छन्न खतरे छुपे हुए हैं वह अमरकांत की कहानी में ज्यादा बेहतर आता अगर वह हत्या नहीं हुई होती। यानि एक नपुंसक , बड़बोली, ऐय्याश युवा पीढ़ी का ज्यादा सही चित्रण हुआ

होता अगर ये हत्या नहीं हुई होती। नामवर सिंह के अनुसार अगर इस कहानी में हत्या नहीं हुई होती तो यह कहानी इतनी महत्त्वपूर्ण नहीं होती। उनका कहना है कि कहानी में हत्यारे के द्वारा की गई हत्या कहानीकार का या रचना का मूल्य निर्णय है। एक वैल्यू जजमेंट है।-

एक अंक के प्रश्न :

1. हत्यारे कहानी के लेखक का नाम लिखिए। - अमरकान्त
2. प्रोफेसर दीक्षित कौन थे ? –इंग्लिश डिपार्टमेन्ट के हेड़
3. लास्की की पुस्तक का नाम क्या है ? –ग्रामर ऑफ पॉलिटिक्स
4. गोरा किस को दोपाया जानवर कह रहा था ? –झोंपड़ी की जवान औरत का पति
5. भागते युवकों में से किसनेझोपड़ी के व्यक्ति के पेट में छुरा भोंक दिया ? –गोरे ने

निबंधात्मक प्रश्न:

1. हत्यारे कहानी का सारांश लिखकर विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
2. हत्यारे कहानी में आधुनिक शिक्षित युवकों के मूल्य हीन, दिशाहीन जीवन दर्शन का चित्रण कैसे किया गया है? विवेचन कीजिए।

टिप्पणी के प्रश्न :

1. प्रोफेसर दीक्षित।
2. गोरा लड़का ।
3. बस्ती की औरत का व्यवहार।

-प्रस्तुति
प्रो.नागभूषण एच.जी.
हिन्दी विभागाध्यक्ष, श्री भुवनेंद्र कालेज, कार्कल

****

7. बादलों के घेरे

-कृष्णा सोबती

लेखिका का परिचय:

कृष्णा सोबती आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रसिद्ध लेखिका हैं। इनका जन्म 1925 ई में हुआ। डार से बिछुड़ी, मित्रो मरजानी, यारों के यार, तिन पहाड़, बादलों के घेरे आदि आप की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। आपने हिंदी कथा भाषा को एक विलक्षण ताज़गी दी है। आप साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित है। 'बादलों के घेरे' इनकी एक संवेदनशील कहानी है।

कहानी का सार:

कथा नायक रवि भुवाली की एक छोटी सी कॉटेज में लेटा है। सामने सूखे -सूखे बादलों के घेरे दिख रहे हैं। रवि का शरीर कंबल से लिपटा है। उसकी देह घुलती जा रही है। वह अकेला पड़ा है; उसे देखने कोई नहीं आ रहा है। अब उसके पास आने का साहस मृत्यु को छोड़कर और किसी में नहीं है। अंतिम साँसें गिन रहे रवि की स्मृति खुल जाती है। उसे जीने का संग था; सोने का संग था और उठने का संग था। वह हर पल वैवाहिक जीवन का सुख भोग रहा था।

एक प्यार तन में जगता है, तन से उठता है, वही देह पाकर दुनिया में जी भी जाता है। एक दूसरा प्यार भी होता है जो पहाड़ के सूखे बादलों की तरह आता है और बिना बरसे ही भटक - भटक कर रह जाता है।

पलंग पर लेटे - लेटे एक पुरानी घटना रवि को याद आ रही है। रवि एक बार गर्मी में अपनी बुआ के यहाँ गया था। वहाँ मन्नो से उसका परिचय बुआ ने करवाया था कि 'मन्नो से

मिलो रवि .. दो ही दिन यहाँ रुकेगी'। वह परिचय बड़ा फ़ीका रहने पर भी मन्नू की ओर रवि का वह प्रथम आकर्षण था। मन्नो से बुआ के बच्चों का लिपटना बुआ को अच्छा नहीं लगता था। बुआ मन्नो से कहती है 'जाओ मन्नो, कहीं घूम आओ। तुम्हें उलझा- उलझा कर तो ये बच्चे तंग कर डालेंगे'। बुआ बच्चों को मन्नू से दूर रखने का प्रयास कर रही थी। मन्नो के उदास चले जाने के बाद रवि ने बुआ से कारण पूछा तो बुआ ने कहा कि उसे छूत का रोग है। वह भुवाली की कॉटेज में अकेली रहती है, लेकिन अपना मन बहलाने के लिए कभी कभी दो-चार दिनों के लिए यहाँ आ जाती है। फिर भी मन्नो के प्रति बुआ का ऐसा व्यवहार रवि को अच्छा नहीं लगा।

मन्नो की घुटन की कल्पना करके रवि का मन उदास हो गया। उलझ कर बाहर निकला देवी के मंदिर के आगे झील में नौकाओं को देखने लगा। एकाएक किश्ती में नहीं, जैसे पानी की नीची सतह पर वही पीला चेहरा नज़र आया। वही बड़ी -बड़ी आँखें, वही दुबली पतली बाँह, वही बुआ के घर वाली मन्नो। ऐसा लगा जैसे पानी में बही चली जा रही है। उसका नाम पुकार रहा है। वास्तव में वहाँ मन्नो नहीं थी। रवि घर पहुँचा। बुआ बच्चों को लेकर कहीं बाहर चली गई थी। अपने बच्चों को मन्नो से दूर रखने के लिए बुआ ने ऐसा किया था। रवि ने सोचा कि बुआ शायद खाने तक लौट आएँगी लेकिन वह नहीं लौटी तो घर के नौकर ने रवि से खाने का अनुरोध किया और कहा कि वह खाना खाने नहीं आएँगी और मन्नू ऊपर के कमरे में अलग से खाएँगी।नौकर की बात सुनकर रवि विवशता से अकेले ही खाना खाने लगा।

खाना खाने के कुछ समय पश्चात रवि मन्नो से मिलने उसके कमरे में गया। सुबह के परिचय से ही रवि का मन मन्नो की ओर आकर्षित था । उस दिन मन्नो ने हल्के पीले कपड़े पहने थे। बहुत सुंदर दिख रही थी। रवि को बैठने के लिए कहकर आपनी शॉल को सूटकेस में रखते हुए मन्नो ने कहा - " शाम से पहले ही नीचे उतर जाऊँगी, बुआ से कहिएगा, एक ही दिन को आई

थी"। रवि ने मन्नो से और एक दिन रुकने का अनुरोध किया। मगर मन्नो न मानी । उसने कहा "क्या करूँगी यहाँ रहकर? भुवाली के इतने बड़े गाँव के बाद यह छोटा सा शहर मन को भाता नहीं"।

मनु टैक्सी में बैठकर चली गई। विदाई के लिए न हाथ उठे, न आँखें। उदास मन लेकर रवि घर के भीतर आया। उसी समय बुआ आई थी। दोनों चाय पीने बैठे। रवि ने कहा – " दो दिन की मेहमान तो एक ही दिन में चली गई" कुछ उत्तर न दे पाने के कारण चाय का प्याला वहीं छोड़ बुआ कमरे से बाहर हो गई।

रवि भारी मन लेकर बिस्तर पर लेटा। कई देर तक मन्नो के बारे में ही सोचता रहा। जीवन का सपना देखता रहा। उसी वक्त बुआ कमरे में आई और रवि को सांत्वना देते हुए कहा- "रवि ,उसके लिए कुछ मत सोचो; उसे अब रहना नहीं है"। रवि ने कहा –बुआ, मुझे ही कौन रहना है"?

आज वर्षों बाद उसके मुँह से निकले अभिशाप के बोल सच्चे होते जा रहे हैं । बुआ ने रवि से कहा -" मैंने मन्नो को अपने बच्चों की तरह ही प्यार दिया है। कभी छुट्टी के दिन उसकी बोर्डिंग से आने की राह देखती रहती। अब उसके आने से पहले जाने का क्षण मनाती हूँ और डरकर बच्चों को लिए घर से बाहर निकल जाती हूँ। उसकी बीमारी से डरने लगी हूँ"। अंत में बुआ ने रवि को चेतावनी देते हुए कहा "रवि कुछ हाथ नहीं लगेगा, जिसके लिए सब राह रुकी हो; उसके लिए भटको नहीं"" अगले दिन मन्नो से रवि की भेंट भुवाली की कॉटेज में हुई। मन्नो बहुत थकी हुई थी। पास बैठने पर भी उसे छूने का साहस रवि में नहीं हुआ। आज रवि की हालत

ठीक वैसी ही है, जैसे कई वर्ष पहले मन्नो की थी। आज रवि स्वयं मन्नो- सा बन गया है। तब जो भय मन्नू से रवि को था; आज वैसा ही भय उसके प्रिय जनों को रवि से है। रवि वापस बुआ के घर आया। दोपहर में फूफा मिले। मन्नू फूफा के भाई की बेटी थी। फूफा ने बुआ और उनके बच्चों को लखनऊ पहुँचाने के लिए कहा। जाते समय भुवाली की सफेदी दिख रही थी। बुआ पिताजी की सबसे छोटी मौसेरी बहन थी। जाते वक्त बुआ ने रवि को सुंदर बहू पाने का आशीर्वाद दिया।

प्लेटफार्म पर आकर रवि ने टिकट ले लिया। शायद मन्नो के पास जाने का इरादा था। मन बदला, टिकट बदला। सीधा, बरेली की गाड़ी में जा बैठा। घर में माँ से मुलाकात हुई। माँ खुश थी; बेटे की शादी करना चाहती थी। रवि ने भी हाँमी भर दी।

एक बार की घटना है मन्नो कमल का फ़ूल तोड़कर मंदिर के कपाट के आगे दहलीज पर रखती है क्योंकि मंदिर बंद था। रवि पुजारी का पता पूछना चाहता है तो मन्नो कहती है “नहीं रवि, मुझे कौन वरदान मांगने हैं? अपने लिए तो कपाट बंद हो गए हैं।

मन्नो को छूने का् भय, उसके रोग का भय, जो अब तक उसे रोकता था; पूरे धैर्य के साथ मन्नो के कंधे पर रवि ने हाथ रखा। कंधे पर पड़े हाथ को अलग करते हुए मन्नो बोली। “रवि, जिसे तुम झेल नहीं सकते, उसके लिए हाथ ना बढ़ाओ”। उस दिन कायर बन कर रवि डरा था और मन्नो से दूर हुआ था।

मन्नॊ से अंतिम विदा लेते समय रवि को बड़ी पीड़ा हुई थी। मन्नो का कहना कि “एक न एक बार तो तुम्हें चले ही जाना है रवि...”। दिन बीतते गए। रवि मन्नो से दूर होता चला गया।

रवि के घर में चहल-पहल थी।रवि की शादी मीरा से हुई। उसे सुंदर संगिनी मिली। मीरा के प्यार में रवि खो चुका था। सुबह- शाम, दिन- रात मीरा और रवि प्यार में डूबे रहने लगे।

दस वर्ष कैसे बीत गए, पता ही नहीं चला था। अचानक रवि चूत के रॊग से ग्रस्त हो गया। और भुवाली की कॉटेज में रहने लगा।

रानीखेत जाते समय मीरा दोनों बच्चों को साथ लेकर चूत के रोग से ग्रस्त रवि से मिलने आई थी। अंदर आने के लिए कहा। उसके बच्चे अंदर आने से डरते थे। माँ की आज्ञा का पालन करते हुए सिर्फ़ प्रणाम किया। उनकी ओर देखने से ऐसा लगा कि इनमें मेरी पत्नी कहाँ है? मेरे बच्चे कहाँ हैं? मीरा उन बच्चों को लेकर चली गई। जाते समय एक बर भी किसीने मुड़कर नहीं देखा। सिर्फ रवि उनको देखता रहा।

एक बार लखनऊ में बुआ की मुलाकात हुई थी। रवि मीरा के प्यार में मन्नो को भूल चुका था। बुआ ने मन्नू की मर जाने की बात कहने पर भी रवि मन्नो के बारे में कुछ ना सुनना चाहता था। बुआ ने यह भी कहा था कि वह तुम्हारे लिए पार्सल छोड़ कर गई थी। उसमें एक जर्सी थी, शायद उसे तुम्हारे लिए रखी थी। इन बातों का असर भी रवि पर नहीं हुआ था। इससे दुखी होकर बुआ बोली “यही बार-बार सोचती हूँ कि जिसके प्यार को भी कोई ना छू सके, ऐसा दुर्भाग्य उसे क्यों मिला?,क्यों मिला?”

रवि साल भर बीमार होने के बाद भुवाली की उसी कॉटेज में जाकर सोया है, जिस कॉटेज में मन्नो सोई थी। रात भर एक ही नाम पुकारता रहता है - मन्नो! मन्नो! ‘आज वह होती तो मुझे झेल लेती’।

जिस मीरा को वर्षों से जाना था वह अपनी नहीं लग रही थी। जिस मीरा को कई बार छुआ था, चूमा था, उसकी याद अब नहीं आ रही है। अब सिर्फ मन्नो की याद आती है क्योंकि सिर्फ़ मन्नो की आँखें उसे सगी लगने लगी है।

खिड़की के सामने लेटे-लेटे अकेलेपन से घबराकर जब रवि बाहर देखता है तो धुंध भरे बादलों के घेरे में मन्नो का चेहरा ही दिखता है। अब रवि जान गया है कि "इस छूटते- छूटते तन में मन को बहुत देर भटकना नहीं होगा एक दिन इन्हीं बादलों के घेरे में समा जाऊँगा"।

एक अंक के प्रश्न :

1) 'बादलों के घेरे' कहानी के कहानीकार कौन हैं ?
2) मन्नो किस रोग से पीड़ित थी?
3) रवि और मन्नो की पहली मुलाकात किसके घर में हुई ?
4) रवि का विवाह किसके साथ होता है ?
5) अंत में रवि को कौन अपने लगते है ?

निबंधात्मक प्रश्न :

1) पठित कहानी के आधार पर 'बादलों के घेरे' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखकर उसकी विशेषताओं की चर्चा कीजिए।
2) पठित कहानी 'बादलों के घेरे' के आधार पर मन्नो और रवि की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

टिप्पणी के प्रश्न:

1. मन्नो 2. रवि 3. बुआ की मनोदशा ।

-प्रस्तुति,

रामकृष्ण के.एस.

सहायक प्राध्यपक, शासकीय महाविद्यालय, सुल्या, द.क.

****

8. नेलकटर

-उदयप्रकाश

लेखक का परिचय :

उदय प्रकाशजी का जन्म सन् १९५२ में मध्यप्रदेश के शहडोल जिले के गाँव सीतापुर में हुआ। आप एक चर्चीत कवि, कथाकार, पत्रकार और फिल्मकार हैं। आपकी कुछ कृतियों के अंग्रेजी, जर्मन, जापानी एवं अन्य अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद भी उपलब्ध हैं। लगभग समस्त भारतीय भाषाओं में रचनाएँ अनूदित हैं। 'उपरांत' और 'मोहनदास' के नाम से आपकी कहानियों पर फीचर फिल्में भी बन चुकी हैं, जिसे अंतर्राष्ट्रीय सम्मान मिल चुके हैं। आप अनेक पुरस्कारों से सम्मनित हुए हैं। कहानी का सारांश: उदय प्रकाश को जादुई यथार्थवाद का कथाकार माना जाता है। 'नेलकटर' मरणासश माँ के प्रति किशोर पुत्र के प्रेम की कहानी है। जब बेटा नौ साल का था तब उसकी माँ कैंसर पीडित होकर मुम्बई के टाटा मेमोरियल अस्पताल में भर्ती हो गई थीं। बचने का कोई उम्मीद न पाकर उन्हें घर ले आया गया था। सिर्फ अनार का रस पीती थीं। वे बोलने के लिए अपने गले में डाक्टरों शारा बनाई गई छेद में उँगली रख लेती थीं। वहाँ एक टयूब लगी थी। उसी टयूब से वे साँस लेती थीं। बहुत बारीक, ठंडी और कमजोर आवाज होती थी वह। कुछ–कुछ यंत्रों जैसी आवाज। माँ को बोलने में दर्द बहुत होता हुआ होगा। इसलिए बहुत कम ही बोलती थीं। उस यंत्र जैसी आवाज में घरवाले माँ की पुरानी अपनी आवाज खोजने की कोशिश करते। कभी–कभी माँ की असली आवाज का एक अंश उन्हें सुनाई पडता तब उन्हें उनके स्मृति में रहनेवाली माँ मिल जातीं। घरवालों के बोलते, लड़ते, चिल्लाते सब शब्द वे सुनती थीं और उन शब्दों से उन्हें राहत मिल जाती। माँ की सिर्फ आँखें बची थीं। जिन्हें देखकर बेटे को उम्मीद जाग उठती थी कि माँ उन्हें छोड़कर कहीं नहीं जाएगी। पूरे जीवन भर उसके साथ रहेगी। वह हमेशा के लिए उनकी उपस्थिति चाहता था।

चाहे वे चित्र की तरह या मूर्ति की तरह ही रहें और न बोलें। माँ के बारे में सोचकर किशोर बेटा बहुत डर जाता था और रोता था। उसके जीवन में अचानक उसे कोई एक बहुत खाली–बिलकुल खाली जगह दिख जाती थी। एक दिन माँ ने बेटे को बुलाया। अपनी हथेली उसके सामने फैला दी। दाएँ हाथ की सबसे छोटी उँगली की बगल वाली उँगली का नाखून एक जगह उखड़ गया था। उससे उन्हें बेचैनी होती थी। बेटा नेलकटर लाकर माँ की पलंग के नीचे फर्श पर बैठ गया। वह नेल कटर पिताजी इलाहाबाद के कुम्भ के मेले से लाये थे। माँ की उँगलियाँ बहुत पतली हो गई थीं। उनमें रक्त नहीं था। उनका हाथ बहुत हल्का हो गया था। बेटा माँ के नाखूनों को बहुत सुन्दर, ताजा और चिकना बना डालना चाहता था। माँ को नाखून का हल्का–हल्का रेती से घिसा जाना बहुत अच्छा लग रहा था। उनके चेहरे पर एक सुख था, जो एक जगह नहीं बल्कि पूरे शरीर की शान्ति में फैला हुआ था। बेटे ने माँ की सारी उँगलियों के नाखून खूब सँवार दिये। माँ ने बहुत प्यार से किशोर बेटे के बालों को छुआ। वे पूछना चाहती थी कि बेटा तू सिर से क्यों नहीं नहाता? बालों में साबुन क्यों नहीं लगाता? इतनी धूल क्यों है? और कंघी क्यों नहीं करता? रात में ठंड़ थी। बाहर जोरों से बारिश हो रही थी। सुबह पाँच बजे आँगन में गाँव की औरतें रो रही थीं। बेटे को पता चला रात में माँ के प्राण उड़ गये थे। बेटे ने उस रात सोने से पहले अपने तकिए के नीचे वह नेलकटर रख दिया था। बहुत खोजने पर भी आज तक नहीं मिला। वह अक्सर उसे खोजने लगता है। क्योंकि चीजें कभी खोती नहीं हैं। सिर्फ इनसान उनकी जगह भूल जाते हैं।

विशेषता: नेलकटर रोजमर्रा काम में आने वाली वस्तु है किन्तु माँ के साथ जुड़कर वह भी उतना ही जरूरी हो जाता है जितनी माँ की स्मृति। कैंसर पीड़ित माँ के नाखून काटनेवाला बेटा उस नेलकटर को आज भी खोज रहा है जब वह बड़ा हो चुका है। असल में यह नेलकटर की नहीं, उस संवेदना की खोज है जो हम आज की भागदौड़ भरी जिन्दगी में भूल

चुके हैं। सम्बन्धों में वह भावना नहीं रही जो हमारी किशोरावस्था में थी क्योंकि तब हम संवेदनात्मक धरातल पर सम्बन्धों को महसूस करते थे, जीते थे। सम्बन्धों की ऊष्मा, संवेदना तथा भावना खोई नहीं है बल्कि हम उनकी जगह भूल गये हैं। कहानी की अंतिम पंक्तियाँ कहानी के उद्देश्य तथा भूली संवेदना का अर्थ स्प१कर देती हैं क्योंकि चीजें कभी खोती नहीं हैं, वे तो रहती ही हैं। वास्तव में यह नेलकटर नहीं, सम्बन्धों में संवेदना तलाशने की प्रतीकात्मक कहानी है।

एक अंक के प्रश्न:

१. 'नेलकटर' कहानी के कहानीकार कौन हैं? -उदय प्रकाश ।

२. माँ किस अस्पताल में भर्ती हो गई थीं ? -टाटा मेमोरियल अस्पताल में ।

३. किशोर बेटे की उम्र कितनी थीं? -नौ साल ।

४. माँ किस रोग से पीड़ित थीं? -कैंसर ।

५. माँ किसका रस पीती थीं? -अनार का रस ।

निबंधात्मक प्रश्न:

१. 'नेलकटर' कहानी का सारांश लिखकर विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

२. 'नेलकटर सम्बन्धों में संवेदना तलाशने की प्रतीकात्मक कहानी है ।' इस कथन को कहानी में कैसे स्प१ किया है? लिखिए।

टिप्पणी के लिए प्रश्न:

1. किशोर बेटा 2. नेलकटर 3. माँ

-प्रस्तुति

मार्सेल लूविस मस्करेनस

हिन्दी विभागाधक्ष, गोविंददास कॉलेज, सुरत्कल

****

9. हरी बिंदी

-मृदुला गर्ग

लेखिका का परिचय :

मृदुला गर्ग सातवें दशक की महिला कथाकार रही हैं। आपका जन्म 1938 ई. में कालका में हुआ। आपने अर्थशास्त्र में एम.ए. किया। आप कुछ वर्ष प्राध्यापिका रही, बाद में लेखन में रम गई। आपने विदेशों में अनेक विद्यालयों में हिन्दी साहित्य, स्त्री विमर्श, पर्यावरण, बाल मजदूरी आदि विषयों पर व्याख्यान दिए हैं। प्रमुख रचनाएँ:उपन्यास–उसके हिस्से की धूप, वंशज, चितकोबरा, अनित्य,मैं और मैं इत्यादि। कहानी–संग्रह–कितनी कैदें, टुकड़ा–टुकड़ा आदमी, डेफोडिल जल रहे हैं ग्लेशियर से, उर्फ सैम, दुनिया का कायदा, शहर के नाम, चर्चित कहानियाँ, समागम इत्यादि। कथा सार: मृदुला गर्ग स्त्री–मुक्ति की रचनाकार हैं, लेकिन उनकी कहानियों में मुक्ति की अवधारणा अलग है। मृदुला गर्ग 2ारा रची गयी स्त्री पात्र कोई बड़ा सामाजिक आन्दोलन या परिवर्तन नहीं बल्कि उसके इर्द–गिर्द खड़ी की गयी परम्पराओं, रिवाजों, मान्यताओं तथा हदबन्दियों को नकार देती है। 'हरी बिन्दी' एक स्त्री की पूरे दिन की कहानी है। उसका यह एक दिन सामान्य दिनों से अलग है। पति रात ही दिल्ली चला गया है इसलिए अगली सुबह से उसकी दिनचर्या बिना पति के शुरु होती है। बिना पति के मतलब उच्छृंखलता नहीं, बल्कि पति 2ारा उठने, ओढ़ने, पहनने, चलने, घूमने, बातचीत तथा व्यवहार में लगाई गई बन्दिशों को नकारकर मनचाहे सहज ढ़ंग से जीने की स्वतंत्रता। राजन की पत्नी सुबह उठते ही देखती है वह बिस्तर पर अकेली है। उसे याद आया रात को ही राजन दिल्ली गया है। आज उसे उठने की कोई जल्दी नहीं है। उसे कलाई पर घड़ी बाँधकर सोने की आदत है। बहुत देर तक बाँहें फैलाकर औंधी लेट गई। उसे लगा सुबह देर तक सोने में कितना आनन्द आता है। राजन को जल्दी उठने की आदत है। आज वह स्वतंत्र है। साढ़े आठ बजे

उठकर एक प्याला चाय बनाकर पीने लगी। आज उसे एक अद्‌भुत स्फूर्ति और उत्साह का अनुभव हो रहा था। नीले रंग का कुर्ता और चूड़ीदार पाजामा पहना तो नीले रंग की बिन्दी माथे पर लगाने को हाथ बढ़ गया। फिर न जाने क्या लगा उसे छोड दिया और बड़ी सी हरी बिन्दी लगा ली। चाँदी की बाली उठाकर कानों में लटका ली। एक पुराना बैग हाथ में लेकर बाहर निकल आई। कुछ दूर चलती गई। कहाँ जाना है कोई लक्ष्य नहीं। आज का दिन यों ही जाना नहीं देगी। टैक्सी पकड़कर जहाँगीर आर्ट गैलरी को जाने को कहा॥ गैलरी में किसी आधुनिक चित्रकार की प्रदर्शनी हो रही थी। आज कुछ भी करने में उसे आनंद आ रहा था। एक चित्र देखते ही वह जोर से हँस पडी। एक दढ़ियल उसे घूरने लगा। दढ़ियल के पास जाकर साँरी कह कर बाहर आई। सड़क के किनारे रेस्तराँ देख याद आया कि काफी भूख लगी है। अंदर जाकर एक साथ आलू की टिकिया और आइसक्रीम को आदेश दिया। उसे ठंडा और गरम एक साथ खाना भला लगता है। उसके बाद वह सिनेमाघर अंग्रेजी पिक्चर देखने गई। पिक्चर के दौरान वह आज और दिनों से ज्यादा ठहाके लगा रही थी। एक दृश्य पर वह इतना हँसी पास बैठे आदमी से उसके हाथ टकरा गए। उसके बाद हँसी आने पर वे अनायास एक दुसरे को देखते और मिलकर हँसते। पिक्चर खतम होने के बाद एक साथ बाहर निकले देखा साढ़े चार बज चुके थे। दोनों कुशलता से बातें करते आगे बढे तो उसने काँफी पीने के लिए उस आदमी को आमंत्रित किया। दोनों एक रेस्तराँ में गये। काँफी मँगाकर दोनों सामने पडे समुद्र को देखते अपने–अपने खयालों में खो गए। मजाक के लिए उस आदमी ने उसके मन के विचारों को जानने के लिए एक पेनी आगे कर दी। वह सोच रही थी अगर वह समुद्र में कूद पड़ी तो कितनी दूर तक अकेली तैर सकती है। तब उस आदमी ने कहा कि वह सोच रहा था कि यहाँ से वोरली तक का टैक्सी का भाड़ा कितना होगा। उसकी बात सुनकर वह जोर से हँस पड़ी और कहने लगी आधा भाड़ा वह देगी। उसे लगा कि जीवन में पहली बार

ऐसे इनसान के साथ बैठी है, जो उसके बारे में कुछ भी नहीं जानना चाहता है। बिल आने पर उसने उसे उठा लिया और कहा न्यौता उसका था। टैक्सी से घर पहुँचे। पैसा निकलते समय उस आदमी ने मना कर दिया और कहा आज का दिन मेरे लिए बहुत कीमती रहा है। उसने पूछा कैसे? उस व्यक्ति ने स्निग्ध भाव से कहा आज से पहले कभी उसने किसी को हरी बिन्दी लगाए नहीं देखा है।

विशेषता:

इस कहानी में यह दर्शाया गया है कि स्त्री को भी पुरुषों की तरह जीने का समान अधिकार है। इस पुरुष प्रधान समाज ने उसके इस अधिकार को छीन लिया है। इस कहानी की नायिका अपनी मर्जी से अपना एक दिन जीती है और उसमें आनन्द और स्वतंत्रता का अहसास करती है। गढ़े गए सामाजिक मूल्यों, मानदण्डों को नकारकर स्वाभाविक जीवन जीना इस कहानी की स्त्री का ध्येय है। यह समकालीन नारीवाद का विमर्श प्रस्तुत करती है।

एक अंक के प्रश्न:

1.'हरि बिन्दी' इस कहानी की कहानीकार कौन हैं ? -मृदुला गर्ग ।

2. हरी बिन्दी कहानी की नायिका के पति का नाम क्या है ? -राजन ।

3. आर्ट गैलरी का नाम क्या है ? -जहाँगीर आर्ट गैलरी ।

4. सिनेमाघर में कौनसी पिक्चर लगी थी?-

अंग्रेजी की पुरानी मजाकिया पिक्चर लगी थी ।

5.अजनबी ने क्या नहीं देखा था ? -किसी को हरी बिन्दी लगाए नहीं देखा था ।

निबंधात्मक प्रश्न:

1. 'हरी बिन्दी' कहानी का सार लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

2. समकालीन नारीवाद का महत्वपूर्ण विमर्श 'हरी बिन्दी' कहानी में कैसे दर्शाया गया है ? समझाइए ।

टिप्पणी के प्रश्न:

1. राजन की पत्नी । 2. अजनबी आदमी

-प्रस्तुति

मार्सेल लूविस मस्करेनस

हिन्दी विभागाधक्ष, गोविंददास कॉलेज, सुरत्कल

****

10. नो बार

– जयप्रकाश कर्दम

कहानीकार का परिचय :

हिन्दी के दलित साहित्य में डॉ .जयप्रकाश कर्दम जी का नाम एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। वह अपने व्यक्तित्व सृजन कर्म के बूते समकालीनों में काफ़ी चर्चित और समादृत है । डॉ जयप्रकाश कर्दम एक बहु आयामी प्रतिभावाले साहित्यकार हैं । कविता, कहानी, उपन्यास लिखने के अलावा दलित समाज की वस्तुगत सच्चाइयों को सामने लानेवाली अनेक निबन्ध व शोध पुस्तकों की रचना व सम्पादन भी उन्होंने किया हैं। उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान है कि उनके सम्पादन में प्रतिवर्ष निकलनेवाली " दलित साहित्य वार्षिकी" ।

कृतियाँ -: छप्पर और करुणा) उपन्यास(, स्मशान का रहस्य) बाल उपन्यास(,गूँगा नहीं था मैं , तिनका तिनका आग) कविता संग्रह(तलाश) कहानी संग्रह

जयप्रकाश कर्दम जी की**" नो बार "**कहानी उनके रचनात्मक विकास को दर्शाती है। उनके रचनात्मक क्षमता का निरंतर विकास हो रहा है। निजी अनुभव किस प्रकार कलात्मकता के स्तर पर पहुँचते हैं। और अनुभव अनुभूति में ढ्ल किस प्रकार विस्वासनीय और वास्तविक धरातल पर प्रस्तुत होते हैं । यह इस कहानी में देखा जा सकता है । आधुनिक समाज में प्रगतिशील और लोकतांत्रिक मूल्यों का समर्थन करनेवाले उस आधुनिक परिवार का केंद्र में रखकर कहानी का ताना बाना बन गया है। जाति भारतीय समाज की हकीकत है । जाति के बिना भारतीय समाज व्यवस्था की कल्पना भी नहीं की जा सकती । समाज का एक बडा हिस्सा तमाम योग्यता के बावजूद हाशिये पर रहा है । जब वह अपनी योग्यता , परिश्रम और बौध्दिकता से मुख्य धारा में आ जाता है तब भी जाति उसका पीछा नहीं छोडती । इस कहानी में समाज में जाति

तोडने की दोहरी नीति रखनेवालों के मूहँ पर तमाचा है।

" नो बार "कहानी में राजेश एक दलित नव युवक था । वह पेपर में निकलनेवाले हर एक मेट्रिमोनोयल कालम को अवश्य पडता था। उसे एक ऐसी योग्य लडकी की तलाश थी, चाहे वह अपनी जाति की हो या किसी अन्य जाति की। एक दिन उसे पत्रिका में ऐसा ही एक मेट्रिमोनियल देखने को मिला। तुरन्त एक विवरण युक्त पत्र लडकी के घर भेजा। पत्र में अपना विवरण में शिक्षा , उम्र, स्वास्थ्य , रूप रंग नौकरी वेतन शौक और अपनी परिवार के जरूरी बातें लिखीं । जाति के बारे में लिखते हुए अटक गया । सोचा कि जब विज्ञापन दाता जाति की भावना से पहले ही मुक्त हैं, तो अपनी जाति लिखने का क्या औचित्य है ? ऐसे में अपनी ओर से जाति का उल्लेख किए बिना पत्र भेजा ।

करीब ढेड सप्ताह के बाद उस पत्र का जवाब मिला और बताया गया था कि लडकीवालों ने उसे अपने घर आमंत्रित किया है । वह लगबग एक घंटे तक वहाँ रहा , उसने लडकी को देखा तो उसे पसन्द आई। लडकी के पिता ने इनसे कहा कि देखिए राजेश जी, हम बडे खुले विचारों के आदमी हैं। जाति-पाँति, धर्म, सम्प्रदाय किसी प्रकार के बंधन को नहीं मानते। ये सब बातें पिछडेपन की प्रतीक है । हमारे परिवार में जितनी भी शादियाँ अंतर्जातीय हुई है । शादी के मामले जल्दबाजी में नहीं करना है । आप दोनों एक दूसरे को पहचानना चाहिए । तुम लोग पढे लिखे हो, दुनिया को देखते हो। अपना भला बूरा अच्छी तरह समझ्ते हो ।तुम जो भी करोगे ठीक ही करोगे । यदि तुम्हें अच्छा लग रहा है, तुम्हारा मन कह रहा है ,तो हमारे लिए भी अच्छा है । तुम्हारी खुशी में ही हमारी खुशी है । इतना कहकर वो चुप हो गए । उनकी यह बात राजेश को बहुत उपयुक्त लिगी थी । उसने उनके विचारों के प्रति अपनी सहमति जताई । " जी हाँ आप ठीक कहते हैं । मैं आपके विचारॊ से पूरी तरह सहमत हूँ । " फ़िर वह चाय पीकर और

थोडी देर ठहरकर चला आया था।

उसके बाद राजेश और अनिता दोनों शादी के सपने देखते हैं । वैसे ही कई बार डेटिंग पर उनकी मुलाकात और बातचीत हुई ।वे एक दूसरे के पहचान में बहुत निकट आये । अंत में शीघ्र एक दूसरे के साथ विवाह-बन्धन में बाँधने की आशा और उमंग के साथ वे दोनों अपने अपने सपनों में डूबे रहते हैं और अनेक बातें करते हैं।

राजेश अपने कमरे में आकर भी देर तक उस लडकी को लेकर अपने भावी जीवन के बारे में सोचता रहा ।

राजेश के पिताजी यह सुनकर चौंक गए । उन्होंने कहा कि " बेटा,मैं अनपढ-गँवार आदमी हूँ , ज्यादा नहीं जानता। पर दुनियादारी को जो थोडा बहुत मैं ने देखा है । उसके आधार पर मेरा सुझाव है कि वे ना पूछे तब तिम्हें अपनी ओर से उनको अपनी जात बता देनी चाहिए । "राजेश ने अपने पिताजी को समझाया कि यह सौभाग्य की बात है कि हमारा सम्बन्ध एक ऐसी ही परिवार से हो रहा है , जो इतना शिक्षित सभ्य, और प्रगतिशील है। अपनी माता पिता की सहमति लेकर राजेश शहर लौट आया था ।

लडकी ने भी अपने माता पिता से कहा कि उसे राजेश पसन्द है। बाद में अनिता के पिता राजेश से राजनीतिक विचारों को लेकर चर्चा करते हैं। इसमें सभी प्रमुख राजनीतिक नेता और पार्टी की बातें होती है । इसमें से उन्हें पता चलता है कि यह लडका पिछडे जाती का है। क्योंकि वह हमेशा ऐसे पक्ष और ऐसे लीडरों के बारे में अपनी राय देता है। राजेश के साथ बातों से लडकी के पिता को लगा कि यह लडका जिस तरह की जबान बोल रहा है , कहीं यह लडका शैड्यूल्ड्कास्ट तो नहीं हैं ।यह विचार मन में आते ही सहसा वह असहज से हो गए और " अरे अनिता "कहते हुए उठकर अन्दर चले गए ।

अनिता के पिता अंदर जाकर मन के संदेहों को व्यक्त करते हैं। पूछते हैं कि अनिता वह लडका किस जाति का है। वह कहती है कि पापा मुझे मालुम नहीं , मैं ने भी कभी उसे पूछा नहीं , लडका अच्छा है और अच्छी आदत है। उसमें कोई बुराई नहीं हैं, स्मोकिंग तक नहीं करता। और फ़िर पापा हमारे पत्रिका एड में पहले ही 'नो बार'छपा था। इसलिए नहीं जानना चाहा कि वह किस जाति का है। पापा, जब हम जाति पाँति को मानते ही नहीं तो फिर वह किसी भी का कास्ट का हो उससे क्या फर्क पडता है। लडकी ने बडी सहजता से कहा। यह सुनकर अनिता के पिता कहते हैं कि " वह सब ठीक है कि हम जाति पाँति को नहीं मानते और हमने माट्रिमोनियल में" नो बार "छपवाया था। फ़िर भी कुछ चीजें देखनी ही होती है। आखिर तो 'नो बार"का यह मतलब कायस्थ,अग्रवाल तथा खत्री ही होता है कोई चमार चूहडे के साथ नहीं कर सकते हैं। " ऐसे कहते हुए राजेश को अछूत और निम्न जाति का समझकर उसके साथ अनिता की शादी कराने से मुकर जाता है।

ऐसे होने पर प्रगतिशीलता का ढोंग क्यों किया जाता है ? क्योंकि वे ब्राह्मणवादी संस्कारों के है। कहानीकार ने ऐसे ही आधुनिक विचारोंवाले समाज के लोगो के वास्तविक चरित्र का पर्दाफ़ाश किया है।

इस में कहानीकार ने एक रहस्यात्मक दृष्टिकोण अपनाया है। जहाँ कहानी के अंत में पता चलता कि है कि वह निम्न जाति का है , इस समाज में दिखावा ढोंग करनेवाले लोगों का आंकन लिखक ने अत्यंत सजग रूप से अभिव्यकत किया है।

एक अंक के प्रश्न :

1. नो बार कहानी का कहानिकार कौन है ? –जयप्रकाश कर्दम।
2. दलित युवक का नाम क्या है ? –राजेश।

3. कितने दिन के बाद पत्र का जवाब मिला ? - डेढ़ सफ्ताह ।

4. लड़की का नाम क्या है ? -अनिता ।

5. शादी के बाद कहाँ हनिमून मनाने चलते हैं ? – ऊटी ।

निबंधात्मक प्रश्न :

1. नो बार कहानी का सार लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।
2. नो बार कहानी के अधार पर राजेश का चरित्र चित्रण कीजिए ।
3. नो बार कहानी के आधार पर समाजिक तथा जाति व्यवस्था पर प्रकाश डालिए
4. नो बार कहानी के आधार पर अंतर्जातीय विवाह और" नो बार "का अर्थ समझाइए ।

टिप्पणी के प्रश्न :

1. सामाजिक व्यवस्था । 2. निता के पिता ।

3. अनिता । 4. जाति व्यवस्था ।

-प्रस्तुति
श्रीमति. प्रफुल्ला बी .
हिन्दी विभागाध्यक्ष,
भंडारकार्स कला व विज्ञान महाविद्यालय, कुन्दापुर

****

विपरितार्थक शब्द (Antonyms)

1. आदान- प्रदान 2. रात- दिन

3. स्वाधीन – पराधीन 4. आय – व्यय

5. अनुज – अग्रज 6. प्रत्यक्ष - परोक्ष

7. घृणा – प्रेम 8. सजीव – निर्जीव

9. मौखिक – लिखित 10. सरस - नीरस

11. सौभाग्य – दुर्भाग्य 12. मोक्ष - बंधन

.13 घात - प्रतिघात .14 संक्षेप – विस्तार

.15 बंधन - मुक्ति .16 वरदान - अभिशाप

.17 रक्षक - भक्षक .18 हर्ष - शोक

.19मूक - वाचाल .20 सफल - असफल

.21 नूतन - पुरातन .22 निरक्षर - साक्षर

.23 दुर्लभ - सुलभ .24 एक - अनेक

.25 अल्पायु - दीर्घायु

****